सम्पादक
हारून रशीद
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

मई, 2021 वर्ष 20 अंक 03

ईद की ख़ुशी

ईद आई ख़ुशियाँ लाई
रब की हम सब करें बड़ाई
पढ़ें दोगाना हम सब मिल कर
मनाएं ख़ुशियाँ हम सब मिल कर
घर घर जा कर करें सलाम
हुब्ब का दें हम सब को पयाम
दावत खाएं और खिलाएं
ग़ुरबा को पर हम ना भुलाएं
पढ़ें नबी पर सलातो सलाम
हर दिन हर शब सुब्हो शाम
लेकिन हो जिक्र सहाबा का
है साफ़ इशारा आक़ा का

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Editing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
रमज़ान का अन्तिम दहा	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	09
धर्म और ज्ञान का पवित्र रिश्ता	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी (रह0)	10
मुसलमान की इज़्ज़त और	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	13
इस्लाम ग़लत फहमियों के	डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	17
रोज़ा और ईदुलफित्र	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	20
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	26
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	29
ज़कात के मसाएल	इदारा	32
तौहीद का अक़ीदा	मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह0	34
अल्लाहु अक्बर के मअ़ना	इदारा	36
बिखरते टूटते रिश्ते	अबू ओमामा	37
अपील बराए तामीर	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-अल आ़राफ़ :

अनुवाद–

और हम ने उनको बारह बड़े–बड़े खानदानों में अलग अलग गिरोहों के रूप में बाँट दिया और जब उनकी क़ौम ने उनसे पानी मांगा तो हमने मूसा के पास वही भेजी की अपनी लाठी पत्थर पर मारो बस उससे बारह स्रोत (चश्मे) फूट निकले, तमाम लोगों ने अपना अपना घाट पहचान लिया, और हमने बादलों से उन पर साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा जो पवित्र चीज़ें तुम्हें दे रखी हैं उनमें से खाओ और उन्होंने हमारा कुछ न बिगाड़ा और खुद अपना ही नुकसान करते रहे [1](160) और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जा कर आबाद हो जाओ और वहां जहां चाहो खाओ पियो और कहते जाओ कि हम मग़फिरत चाहते हैं और शहर के दरवाज़े से विनम्रता के साथ दाखिल हो जाओ तो हम तुम्हारी गलतियाँ माफ कर देंगे और हम अच्छे काम करने वालों को आगे और देंगे(161) तो उनमें अत्याचारियों ने जो उनसे कहा गया उसका कुछ का कुछ कर दिया तो हमने उनके अत्याचार के बदले में उन पर आसमान से अज़ाब उतारा [2](162) और उनसे उस बस्ती के बारे में पूछिए जो समुद्र के सामने थी जब वे सनीचर के दिन हद से आगे बढ़ जाते थे, जब उनके सनीचर का दिन होता तो मछलियाँ ऊपर आतीं और जब वे सनीचर का दिन न मना रहे होते तो न आतीं, इस तरह हम उनकी परीक्षा लेते, इसलिए कि वे अवज्ञा किया करते थे [3](163) और जब उनमें से कुछ बोले कि तुम ऐसी क़ौम को क्यों नसीहत करते हो जिसको अल्लाह विनष्ट करने वाला है या उनको कठोर अज़ाब देने वाला है, उन्होंने कहा कि तुम्हारे पालनहार के दरबार में ज़िम्मेदारी से बरी होने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें(164) फिर जब यह लोग वह बात भुला बैठे जिसकी उन्हें नसीहत की गई थी तो जो लोग बुराईयों से रोका करते थे उनको हमने बचा लिया और अत्याचारियों को उनकी लगातार अवज्ञा के बदले में एक बहुत ही बुरे अज़ाब में ग्रस्त किया [4](165) फिर जिस चीज़ से उनको रोका गया उससे जब वे आगे बढ़ गए तो हमने उनसे कहा कि अपमानित बन्दर बन जाओ[4](166) और जब आपके पालनहार ने आगाह किया कि वह

क़यामत तक उन पर ऐसे को अवश्य नियुक्त रखेगा जो उनको कठोर यातनायें देता रहेगा[6], बेशक आपका पालनहार बहुत जल्द सज़ा देने वाला भी है और बेशक वह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयावान भी है(167) और हमने उनको ज़मीन में संप्रदायों में बाँट कर रख दिया, उनमें भले भी थे और उनमें उसके अलावा बुरे भी थे और नेमतों और मुसीबतों से हमने उनकी परीक्षा ली कि शायद वे रुक जाएं(168) फिर उनके बाद अयोग्य लोग आये वे किताब के वारिस हुए, वे इस साधारण जीवन का सामान लेते और कहते कि हमारी तो मग्फ़िरत हो जायेगी और अगर फिर उनको वैसा ही सामान मिलता तो ले लेते[7], क्या उनसे किताब के विषय में प्रण (अहद) नहीं लिया गया कि वे अल्लाह पर सिवाए सच के कुछ न कहेंगे और उसमें जो लिखा है वह उन्होंने पढ़ भी लिया और परहेज़गारों के लिए तो आख़िरत की ज़िन्दगी ही बेहतर है, क्या फिर तुम इतनी भी बुद्धि नहीं रखते(169) और जिन्होंने किताब को थाम रखा है और उन्होंने नमाज़ कायम की है तो हम सुधार रखने वालों के बदले को बिल्कुल बर्बाद नहीं करते(170)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. सैना घाटी में जब पानी और खाने की समस्या उत्पन्न हुई तो अल्लाह ने एहसान किया और उनमें बारह बड़े परिवार बना कर प्रधान निर्धारित किये और हर परिवार के लिए मुअज़िज़े के रूप में पानी की व्यवस्था की और मन्न व सलवा उतारा, बादलों से उन पर छाया की और हर प्रकार से अच्छी अच्छी चीजें दीं लेकिन वे नाशुक्री करते रहे।

2. फिलिस्तीन जो उनका पैतृक देश था वहां जा कर जिहाद करने का आदेश हुआ और विजय का आश्वासन दिया गया तो भी इस क़ौम ने इससे इन्कार कर दिया और कोई बात न मानी, विनम्रता पूर्वक प्रवेश करने का आदेश था तो अकड़ते हुए प्रवेश किया, माफी की प्रार्थना करते हुए प्रवेश करने का आदेश था तो मज़ाक करते हुए प्रवेश किया।

3. ईला के वासियों की यह कहानी है अवज्ञा की उनको आदत थी, शनिवार का दिन यहूदियों में केवल उपासना का था उस दिन और कोई काम उनके लिए वैध न था, अल्लाह परीक्षा लेना चाहता था शनिवार के दिन मछलियाँ बहुत आतीं रविवार को ग़ायब हो जातीं उन्होंने पाखण्ड किया और पानी काट कर खेत बना लिये शनिवार को जब मछलियाँ खूब आईं तो रास्ते बन्द कर दिये और रविवार को खूब शिकार किया अल्लाह ने इस पर कठोर अजाब भेजा और उनको बन्दर बना दिया गया।

4. उनमें तीन प्रकार के लोग हो गये एक बुराई करने वाले एक रोकने वाले और एक वे जो अलग थलग रहे, आयत के आरम्भ में उन्हीं लोगों की

शेष पृष्ठ .....08....पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

रोज़े की रूहः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स रमजान में अज्र और ईमान की खातिर रोज़े रखेगा तो उसके तमाम अगले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के आखिर के दस रातों में रात भर जागते थे और अपने घर वालों को भी जगाते और खुद क़मर कस कर तैयार हो जाते थे।

(बुखारी—मुस्लिम)

रोज़ेदार को ज़बान की हिफ़ाज़त का हुक्मः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रोज़ेदार को चाहिए कि रोज़े के दिन बेहयाई का काम न करे, न शोर करे, और अगर कोई उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो कह दे कि मैं रोज़ेदार हूँ।

(बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख़्स ने झूठ बोलाना और झूठी बात पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पानी छोड़ने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं। (बुख़ारी)

एतिकाफः–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रमज़ान के आखिर के दस दिनों में एतिकाफ फरमाते थे।

(बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़िन्दगी भर रमज़ान के अखीर दस दिनों में एतिकाफ फरमाते रहे और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप सल्ल0 की बीवियाँ एतिकाफ करती रहीं। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 रमज़ान के अखीर के दस दिनों में एतिकाफ फरमाते रहे और वफात के साल बीस दिन एतिकाफ फरमाया। (बुखारी)

शव्वाल के 6 रोज़ेः–

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसने रमज़ान के पूरे रोज़े रखे और फिर शव्वाल के 6 रोज़े रख लिये तो गोया उसने पूरे ज़माने के रोज़े रखे। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सोमवार और जुमेरात के दिन अल्लाह तआला हर उस शख़्स को

बख़्श देता है जिसने शिर्क न किया हो मगर जिन दो लोगों के दरमियान रंजिश होती है, तो अल्लाह फरमाता है कि इन को छोड़ दो जब तक यह सुलह न कर लें।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़ियादा बोलना छोड़े और जिसने ऐसा किया और उसी हालत में मर गया तो दोज़ख़ में जायेगा।

(अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि किसी मुसलमान को जायज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से जाइद बोलना छोड़ दे, अगर तीन दिन इसी हालत में गुज़र जायें तो उसको चाहिए कि मुलाक़ात हो तो फौरन सलाम करे, अगर दूसरे ने जवाब दिया तो सवाब में दोनों शरीक़ हुए और अगर उसने जवाब न दिया तो वह गुनहगार हुआ और सलाम करने वाला इस तअल्लुक़ तोड़ने के गुनाह से निकल गया। (अबू दाऊद)।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा .....

बात कही जा रही है, बस अवज्ञाकार तबाह किये गये और रोकने वालों को बचा लिया गया जिस तीसरे वर्ग ने बुराई से रोकने से खामोशी अपनाई उसका अंजाम क्या हुआ उस का यहां कोई उल्लेख नहीं है, उन्होंने खामोशी अपनाई तो अल्लाह ने भी उनके बारे में खामोशी अपनाई, लेकिन चूंकि वे बुराई को बुरा समझते थे इसलिए आशा उनकी निजात (माफ़ी) की भी है इसलिए कि यह बुराई से रोकने की तीसरी सबसे कमज़ोर श्रेणी है कि आदमी अगर नहीं कह सकता तो दिल से बुरा समझे।

6. ऐसा मालूम होता है कि यह आयत पिछली आयत की व्याख्या है कि यही सबसे बुरा अज़ाब था या शुरु में कुछ कठोर अज़ाब आया होगा, जब अवज्ञा में सब सीमाएं लांघ गए तो बन्दर बना दिये गये।

7. यहूदियों का पूरा इतिहास अपमान तृस्कार से भरा हुआ है हर युग में उन्हें अधीनता का अपमान उठाना पड़ा है कुछ दशकों से उनको अमरीका के दामन में शरण मिली हुई है।

7. घूसखोरी प्रकृति में समाई हुई थी, पैसा ले कर शरीअ़त (ईश विधान) के आदेश को बदल देते और विश्वास रखते कि हम अल्लाह के प्रिय हैं पकड़े नहीं जाएंगे इसलिए आगे भी घूस लेने की इच्छा रखते थे, हालांकि उनसे वचन लिया जा चुका था कि वे सत्य बात ही कहेंगे और तौरेत उनके सामने भी थी मगर फिर भी वे बाज़ न आते थे हाँ उनमें कुछ लोग थे जो सत्य पर क़ायम थे।

❖❖❖

—प्रस्तुति—

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

रमज़ान का अन्तिम दहा (आखरी अ़शरा)

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

रमज़ान का अन्तिम दहा बहुत ही शुभ है, बाबरकत है, इस दहे में अल्लाह तआला जहन्नम की आग से बचा कर जन्नत में प्रवेश के फैसले करते हैं, इस दहे में एक रात है जिसको लैलतुल कद्र कहते हैं लैलतुल कद्र ही में अल्लाह तआला ने पवित्र कुर्आन को लौहे महफूज़ से आसमाने दुन्या पर उतारा था, फिर वहां से आवश्यकतानुसार थोड़ा—थोड़ा उतारा जाता रहा, यहां तक कि 23 वर्षों में पूरा कुर्आन प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतार दिया गया।

लैलतुल कद्र ऐसी शुभ रात है कि अपने शुभ होने में हज़ार महीनों से बढ़ कर है, इस रात में अल्लाह के आदेश से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फरिश्तों के साथ उतरते हैं वह बन्दों के लिए हर प्रकार के अच्छे आदेश लेकर उतरते हैं, इस रात में पूरी रात सलामती उतरती रहती है यहां तक कि भोर हो जाये इस रात में जो इबादत की जाती है वह हज़ार महीनों से अधिक सवाब रखती है, परन्तु यह रात बन्दों से छुपा दी गयी है, यह रात आख़ारी अशरे की विषम रातों में से किसी रात में आती है, छुपाई इसलिए गयी ताकि रोज़ेदार रमज़ान के अन्तिम दहे की सभी विषम रातों में जाग कर अल्लाह की इबादत करें और अधिक से अधिक सवाब पायें और जब तमाम विषम रातों में जागेगा तो लैलतुल क़द्र भी पा जायेगा, लैलतुल कद्र की ख़ास दुआ यह है अल्लाहुम्म इन्नक अ़फ़ुव्वुन तुहिब्बुल अ़फव फ़अ़फ़ुअ़न्नी'' जो अक्षर पूरा हो न आधा हो न कोई मात्रा लगी हो न हलन्त हो उसको पृथक अक्षर की भांति पढ़ें तो स्वतः ज़बर की आवाज़ निकल आयेगी जैसे म=مَ ,क=كَ,ज़बर के लिए आ की मात्रा लगाना ग़लत है।

अनुवादः *हे अल्लाह आपका एक गुण क्षमा करना है, आप क्षमा करने को प्रिय रखते हैं अतः मुझे क्षमा कर दीजिए।*

रमज़ान के अन्तिम दहे की एक मुख्य उपासना है जिसको एअ़तिकाफ कहते हैं, रमज़ान के अन्तिम दहे में एअ़तिकाफ सुन्नते मुअक्किदा अलल किफाया है यानी अगर महल्ले या बस्ती का कोई व्यक्ति एअ़तिकाफ कर लेगा तो यह सुन्नत सब की तरफ से अदा हो जायेगी, और अगर कोई भी एअ़तिकाफ न करेगा तो सुन्नत छोड़ने का सब पर गुनाह होगा।

एअ़तिकाफ के लिए बीस रमज़ान की मग़्रिब में एअ़तिकाफ की नीयत से मस्जिद में दाखिल होते हैं और फिर मस्जिद ही में रहते हैं जब ईद का चाँद दिखता है तो मस्जिद से निकलते हैं, अलबत्ता शरई ज़रूरतों से मस्जिद से निकलते हैं

शेष पृष्ठ .....28....पर

धर्म और ज्ञान का पवित्र रिश्ता

—हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का मानवजाति पर एक बड़ा एहसान यह है कि आपने धर्म और ज्ञान के बीच एक पवित्र स्थायी रिश्ता पैदा कर दिया। और एक दूसरे के भविष्य को एक दूसरे से सम्बद्ध कर दिया। आपने ज्ञान को ऐसा प्रोत्साहन दिया जिसके फलस्वरूप इस्लामी इतिहास में ज्ञान व लेखन के ऐसे आन्दोलन ने जन्म लिया जिसकी मिसाल अन्यत्र नहीं मिलती।

इसकी एक बड़ी दलील यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर नाज़िल होने वाली पहली 'वही' में सृष्टि के निर्माता ने मानवजाति को ज्ञान देने के उपकार का उल्लेख किया है और इसमें क़लम का उल्लेख किया जिससे ज्ञान का चोली दामन का साथ है और जिससे लिखने व पढ़ने पढ़ाने का विश्वव्यापी अभियान जारी हुआ और ज्ञान एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति, एक क़ौम से दूसरी क़ौम, एक युग से दूसरे युग तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता रहा। संसार में ज्ञान का प्रचार और मानव आवश्यकतानुसार उसका प्रसार क़लम की बदौलत हुआ। क़लम डुलाने से ही शैक्षिक संस्थाओं और पुस्तकालयों की दुन्या आबाद है।

जहाँ तक मानवीय अन्दाज़ों का सम्बन्ध है, इस बात का कोई अनुमान न था कि पहली 'वही' में 'क़लम' का उल्लेख भी आ सकता है। क्योंकि यह 'वही' एक उम्मी इन्सान पर एक अनपढ़ क़ौम के बीच एक पिछड़े क्षेत्र में नाज़िल हो रही थी जहाँ 'क़लम' सबसे अधिक अनोखी व दुर्लभ चीज़ थी। इसलिए अरबों का लक़ब ही ''उम्मी'' पड़ गया था।

अनुवादः—*''वही है जिसने अनपढ़ों में उन्हीं में से एक पैग़म्बर भेजा जो उनको अल्लाह की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें किताब व हिकमत की बातें सिखाता है, और इससे पहले तो यह लोग खुली गुमराही में थे''।*

(सूरः जुमअः 2)

कुर्आन ने यहूदियों के कथन का उल्लेख किया है जो मदीने में अरबों के पड़ोसी थे और साथ रहने के कारण उनसे भली प्रकार परिचित थे। वह कहते थे किः—

अनुवादः—*''हमारे ऊपर उम्मियों (अनपढ़ अरबों) के बारे में कोई ज़िम्मेदारी ही नहीं।''*

(सूरः आलेइमरान—75)

कुर्आन कहता हैः—

अनुवादः—*''और इसी प्रकार हमने आप के पास 'वही' अर्थात अपना हुक्म भेजा। आपको न यह ख़बर थी कि किताब क्या चीज़ है और न यह कि ईमान (क्या चीज़ है), लेकिन हमने इस (कुर्आन) को नूर (दिव्य प्रकाश) बना दिया है कि इसके द्वारा हम*

हिदायत (राह दिखाते) करते हैं, बन्दों में से जिसको चाहते हैं, और इसमें कोई शक नहीं कि आप सीधी राह ही दिखा रहे हैं।'' (सूरः शूरः 52)

अनुवादः—*''और आप तो इस (कुरआन) से पहले न कोई किताब पढ़े हुए थे और न उसे (अर्थात कोई किताब) अपने हाथ से लिख सकते थे, अन्यथा यह झूठा ठहराने वाले लोग शंका निकालने लगते।''*

(सूरः अन्कबूत—48)

हिरा की गुफ़ा (ग़ारे हिरा में) 'नबी—ए—उम्मी' पर यह पहली 'वही' उतरती है तो इसमें इबादत का हुक्म और अल्लाह का सानिध्य तथा उसके आज्ञापालन आदि के मानने की कोई बात अथवा बुतों के त्यागने या अज्ञानता और उसके तौर तरीक़ों को नकारने जैसी कोई बात नहीं कही गई, यद्यपि यह सब बातें अपनी जगह पर महत्वपूर्ण थीं और समय—समय पर जगह—जगह इनकी व्याख्या की गई और प्रचार किया गया, बल्कि इस 'वही' का शुभारम्भ 'इक़्रा' अर्थात 'पढ़ो' शब्द से होता हैः—

अनुवादः—*''आप पढ़िये अपने परवरदिगार के नाम के साथ जिसने सबको पैदा किया है, जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया है। आप कुर्आन पढ़ा कीजिये और आपका परवरदिगार बड़ा करीम (दयालु) है जिसने क़लम के ज़रिये से शिक्षा दी है। जिसने इन्सान को उन चीज़ों की तालीम दे दी जिन्हें वह नहीं जानता था''।*

(सूरः अलक़ 1—5)

इस प्रकार एक ऐतिहा——सिक घटना घटी जिसने इतिहासकारों व विचारकों के लिए नया क्षितिज प्रदान किया। यह इस बात की ओर स्पष्ट संकेत था कि इस 'नबी—ए—उम्मी' के द्वारा मानवता और धर्मों के इतिहास में एक नया युग प्रारम्भ होगा जो अपने विशाल अर्थ में साक्षरता और पढ़ने लिखने का विकसित युग और ज्ञान (इल्म) के शासन का स्वर्णिम—युग होगा। और इस तरह इल्म व दीन (ज्ञान व धर्म) दोनों मिल कर नयी मानवता की रचना करेंगे। और इसका शुभारम्भ नबी सल्ल0 उस मालिक के नाम के साथ करेंगे जिसने सृष्टि की रचना की और मनुष्य को पैदा किया ताकि वह ईश्वर में विश्वास रखते हुए अपना सफर जारी रख सके। इसलिए कहा गयाः—

अनुवादः—*''आप पढ़िये अपने परवरदिगार के नाम के साथ जिसने सबको पैदा किया है।''*

इसके साथ इन्सान अपनी हक़ीक़त को भी जानता हो ताकि अपनी हस्ती को न भूले और हद से न बढ़े और ज्ञान विज्ञान के विकास व प्रकृति पर विजय से धोखा न खा जाये। इसलिए फरमायाः—

अनुवादः—*''जिसने इन्सान को खून के लोथड़े से पैदा किया।''*

फिर क़लम को आदर दिया और उसकी क़दर व क़ीमत बढ़ाई और ज्ञान व शिक्षा के क्षेत्र में उसकी कृतियों का उल्लेख किया

जिसका मक्का और अरब प्रायद्वीप में जानना आसान न था, इसीलिए अरब प्रायद्वीप में पढ़े लिखे व्यक्ति को 'कातिब' कहा जाता था, इसी सन्दर्भ में कहा गयाः–

''जिसने क़लम के ज़रिये से तालीम दी''।

फिर मनुष्य की इस क्षमता की तरफ़ इशारा किया गया कि वह ज्ञान विज्ञान की आधुनिकतम जानकारी प्राप्त कर सकता है और अपने ज्ञान की सीमाओं को बढ़ा सकता है किन्तु इन सब का स्रोत ईश्वरीय ज्ञान और मनुष्य की ऐसी रचना है कि वह अज्ञात को ज्ञात और ओझल को साफ़ कर सके। इसलिए कहा गयाः–

''इन्सान को उन चीज़ों की तालीम दी जिन्हें वह नहीं जानता था''।

इस प्रकार इस पहली 'वही' में वह बात बयान की गई जिसकी आगे के सोपान निर्धारण में बड़ी भूमिका है। और जो ज्ञान व कौशल, प्रचार व प्रसार तथा विचारधारा पर छायी रहती है। अतएव इस्लाम धर्म और ज्ञान व कौशल का चोली दामन का साथ है। इसने ज्ञान प्राप्ति के प्रयासों को सदैव बढ़ावा दिया है। उसे ज्ञान से कभी बैर नहीं रहा है।

कुछ धर्म ऐसे भी हैं जो इल्म (ज्ञान) की मौत में अपनी ज़िन्दगी और उसकी पराजय में अपनी विजय महसूस करते हैं। यह बात दृष्टान्त से और स्पष्ट हो जाती है। एक बार मच्छरों ने हज़रत सुलैमान अलै0 से तेज़ हवा की शिकायत की कि हवा हमको बहुत परेशान करती है। इसके चलते ही हमको भागना पड़ता है। इस पर सुलैमान अलै0 के दरबार में हवा को बुलाया गया। मगर उस के आते ही मच्छर ग़ायब हो गये। सुलैमान अलै0 ने कहा कि वादी की अनुपस्थिति में हम कैसे फैसला करें? यही हाल अनेक धर्मों का है। भारत के कुछ प्राचीन धर्म और उनके प्रवर्तकों की गतिविधियाँ भी इसके अनेक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

योरोप में ईसाई धर्म और ज्ञान की खैंचतान का क़िस्सा तो बहुत मशहूर है। अमरीकी लेखक 'ड्रेपर' की किताब 'कान्फलिकट बेटवीन रेलिजन ऐण्ड साइंस' ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारति बड़ी ज्ञानवर्धक पुस्तक है। योरोप के मध्य युग में स्थापित होने वाली जाँच अदालतों और गिरजाघर के सताये हुए लोगों की संख्या हज़ारों से अधिक है। उन दिल दहला देने वाली सज़ाओं से जो इन अदालतों द्वारा दी गयीं, आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

ईसाई धर्म विश्वास की जाँच की यह अदालतें रोमन कैथालिक की ओर से मध्य युग में इटली, स्पेन, जर्मनी और फ्राँस में स्थापित की गयी थीं। यह 'दुन्यादारी' के जुर्म में बन्दी व्यक्तियों को निर्मम व कठोर दण्ड देने के लिए मशहूर थीं। स्पेन में अरबों

शेष पृष्ठ.....35....पर

मुसलमान की इज़्ज़त और इन्सानियत का आदर

—हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

हमारी ज़िन्दगी के सारे काम दो क़िस्मों में बंटे हुए हैं, एक वो जो हमारी चाहत और मर्ज़ी के मुताबिक़ हैं, और दूसरे वो जो हमारी चाहत और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हैं, जैसे अपनी पसन्द का खाना, अपनी पसंद का पहन्ना, अपने को आराम पहुंचाना, अपनी पसंद और चाहत के कामों में वक़्त लगाना, अपना रोब ज़माना, अपनी बड़ाई जताना और अपने को आकर्षक और पसंदीदा दिखाना यह सब हमारी पसंद और चाहत की बातें हैं, इनके करने में हम को कोई तकलीफ़ नहीं होती, बल्कि मन लगता है और मज़ा मिलता है, इस पर जो वक़्त लगे खुशी से लगाया जाता है, जो पैसा खर्च हो खुले दिल से किया जाता है, इस के लिए किसी को प्रेरित करने की, शौक दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती, यह सब खुद ब खुद होता है, और दुन्या में हर तरफ़ अंजाम दिया जा रहा है, इन पर ख़ुशी के साथ खूब वक़्त लगाया जाता है और खूब दौलत ख़र्च की जा रही है, लेकिन वो काम जो हमारी चाहत और मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हैं लेकिन अच्छे हैं और ज़रूरत व शराफ़त के हैं, सारा मसला उनका है, उनको करने के लिए उनको इख्लास वाले और सहानुभूति रखने वाले लोगों को कोशिश करनी होती है, मुसलमान को उसका मजहब प्रेरित करता है कि ज़िन्दगी की ज़िम्मेदारियों को खुदा के हुक्मों के मुताबिक़ और अपने सम्बन्धित और आस पास के लोगों के फ़ायदे नुक़सान का लेहाज़ करके पूरा किया जाए, उसको बताया गया है कि उसको आखिरत में अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर हो कर जवाब देना होगा कि अपने परवरदिगार के कहने के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारी थी या नहीं और अपनी राहत की फ़िक्र व तलाश करते वक्त दूसरे के साथ अत्याचार या उसका हक़ तो नहीं मारा था, कुर्आन मजीद में और हदीस शरीफ़ में इसके आदेश हैं विवरण हैं, निर्देश हैं और आख़िरत के बदले की उम्मीद दिलाई गई है, और सज़ाओं से डराया गया है, जो मुसलमान अल्लाह से डरते हैं और आख़िरत में भलाई चाहते हैं उनके यहां इस के प्रभाव मिलते हैं।

दूसरे धर्मों के मानने वालों के यहां भी इसके कुछ निर्देश मिलते हैं, जिनकी रोशनी में आदमी को कुछ ख़याल हो सकता है कि अपने आराम और फ़ायदे की तलाश में हम इतना बढ़

जाएं कि दूसरों को नुक़सान पहुंचे, लेकिन धर्म से बेपरवाह लोगों में चाहे मुसलमान हों या गैरमुस्लिम या पूरे तौर पर दुन्या में लीन जिनके यहाँ धार्मिक शिक्षाओं से कोई लेना–देना नहीं। या उनके धर्म में मनमानी ज़िन्दगी गुज़ारने में कोई पकड़ नहीं उनके यहां जितना उपलब्ध हो सके ऐश किया जाए और जो सम्भव हो सके वो फ़ायदा उठाया जाये ऐसे लोग अपने आराम के लिए और अपनी इच्छा पूरी करने के लिए जो भी अत्याचार और हक मारे कोई अश्चर्य की बात नहीं, दूसरों की तकलीफ़ या नुक़सान का लेहाज़ किये बिना अपनी इच्छा और आराम की चिन्ता करना असल में यह वह मांसिकता है जिसने इस समय दुन्या में तबाही मचा रखी है, ज़ालिम को ज़ुल्म में मज़ा आता है, या फायदा हासिल होता है, लेहाज़ा पीड़ित के दुख की चिन्ता क्यों करे, अय्याश को अपनी अय्याशी के लिए दौलत लुटाना है वह इसको हासिल करने के लिए अच्छे बुरे और झूठ सच की चिन्ता क्यों करे और ऐसा आदमी जब अपने मक़्सद को हासिल करने की चिन्ता करेगा और इसके लिए धन की ज़रूरत होगी तो वह धन किसी न किसी तरह हासिल करेगा चाहे किसी दूसरे को नुकसान पहुंचाना पड़े, घूस, ब्याज, ग़बन दूसरे के साथ ज़ुल्म यह सब उसी जीवन शैली से पैदा होते हैं, यह वो परिस्थिति है जो बढ़ कर सारी दुन्या को विनाश की खोह में पहुंचा सकती थी और कमज़ोरों और गरीबों की ज़िन्दगी को नरक बना सकती थी।

लेकिन अल्लाह का बड़ा करम है उसने हर इन्सान के सीने में दिल रखा है, उस दिल में उसका ज़मीर (अंतरात्मा) है जो बुरी बात को बुरा देख सकता है और उस पर टोक सकता है और अच्छी बात को अच्छा देख सकता है, और उसके लिए प्रेरित कर सकता है, इस तरह एक तरफ़ इन्सान का नफ़्स उसे धोखा देता है और उसकी इच्छा के लिए बुरी बात को भी अच्छा बना कर पेश करता है, तो दूसरी तरफ़ उसका ज़मीर इशारा करता है कि नहीं यह बुरी बात है, इस तरह नफ़्स व ज़मीर की कशमकश होती है, ज़मीर ताकतवर हो तो नफ़्स को रोकता है और बहुत सी बुराइयाँ रुक जाती हैं और दुन्या किसी तरह चलती रहती है, दोस्ती के हुकूक का लेहाज़ और क़द्रदानी नज़र आ जाती है, पड़ोसी के कुछ हुकूक भी अदा हो जाते हैं और मज़लूम की मदद का एहसास भी उसकी कुछ मदद की तरफ़ आकर्षित कर देता है और इस तरह इन्सान चाहे दिखावे के लिए करे कुछ न

कुछ करता है, अगर नफ़्स को अकेले राज मिल जाता तो दुन्या जल्द ही तबाह हो जाती। अमीर लोग ग़रीबों की ज़िन्दगियों को कठिन बना देते, ज़ालिम मज़लूम को ख़त्म कर देता, दुन्या की कोई ख़राबी ख़राबी न समझी जाती, आदमी सिर्फ़ अपने दिल की चिन्ता करता है चाहे वह दूसरे की निगाह में कैसा ही बुरा क्यों न हो और चाहे उस से किसी दूसरे को कितना ही नुकसान होता है, लेकिन ज़मीर हर इन्सान के पास है और वह ज़िन्दा हो तो टोकता है और बहुत सी बुराईयों और अत्याचार से रोकता है, इसीलिए सुधार चाहने वाले ज़मीर को आवाज़ देते हैं, ज़मीर को बेदार करते हैं, ज़मीर बुरी बात को देख कर कहता है कि बुरी बात को लोग क्या कहेंगे, दुन्या क्या सोचेगी, लोग क्या राय क़ायम करेंगे, यह बात आदमी के लिए कुछ रोक बन जाती है और दुन्या में बुराई करने की हिम्मत कम होती है और बहुत सी बुराईयाँ रुक जाती हैं, लेकिन यह जब होता है जब ज़मीर ज़िन्दा हो, बेदार हो।

लेकिन ज़मीर मुर्दा हो या कमज़ोर हो तो मुक़ाबला नहीं कर पाता है, इस वक़्त दुन्या में ज़मीर आम तौर पर दबा हुआ है, नफ़्स का राज़ है, अच्छे बुरे की तमीज़ उठती जा रही है, मुसलमान के लिए ज़मीर, और अल्लाह की नाराज़गी का ख़ौफ़ दो रुकावटें हैं और गैर मुस्लिम में सिर्फ़ ज़मीर की रुकावट है, लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुसलमान दो रुकावटों के बावजूद बुरे हाल में हैं, ग़ैरमुस्लिमों और दुन्यादारों में वो कौन सी बुराईयां हैं जो मुसलमानों में नहीं हैं, जब कि ख़ैरे उम्मत हैं, उनकी धार्मिक किताब कुर्आन मजीद उनके सामने है जिसमें जगह–जगह उन बुराईयों की तरफ़ ध्यान दिलाया गया है जिनमें ख़ुदा तआला की नाराज़ी से डराया गया है और उन बुराईयों के बुरे अंज़ाम बताये गये हैं, हदीस शरीफ़ मौजूद है जिस की शिक्षाओं में इन्सान को खूबियों और ख़राबियों से अवगत कराया गया है, लेकिन उन सब बातों के प्रभाव न होने के बराबर हैं, हम अपने नफा और मस्लहत को हासिल करने में दूसरे के हक़ की हदों को पार कर जाते हैं, और यहां नहीं बल्कि अपने अमल के दुरुस्त और सही होने के हर तरह के तर्क और प्रमाण तैयार कर लेते हैं, अपना थोड़ा फ़ायदा हो रहा हो तो उस के नतीजे में दूसरे का ज़ियादा नुक़सान भी नहीं देखते, अपनी पसंद का मामला आ जाये तो न ख़ुदा के हुक्म पर ध्यान देते हैं और न दूसरे को जो नुक़सान हो सकता है, उसको देखते हैं, दहेज लेने का अवसर

मिल रहा हो तो यह नहीं देखते कि देने वाले पर क्या गुज़रेगी और क्या तबाही आयेगी, दहेज की मात्रा को कम महसूस करते हैं तो बीवी की ज़िन्दगी दुश्वार कर देते हैं, दफ़्तर में होते हैं और काम कराने वाले से सामना होता है तो उसकी बेचारगी की तरफ़ ध्यान दिये बिना उससे जो फ़ायदा उठाना सम्भव होता है उसके उठाने से परहेज़ नहीं करते, अपने खेत के छोटे होने का एहसास होता है तो पड़ोसी के खेत से जितना संभव हो सके अपने खेत में मिला लेना चाहते हैं, बाज़ार में माल बेच रहे होते हैं तो महंगा बेचने की कोशिश करते हैं चाहे उसकी वजह से ज़रूरतमंद आदमियों को कैसी ही तकलीफ़ हो जाए, अपनी निर्धारित राय का बचाव इस तरह करते हैं जैसे वह अक़ीदे की बात हो कि ज़रा भी फ़र्क नहीं हो सकता और दूसरे की राय अगर अच्छी न मालूम हो तो ऐसे नज़रअन्दाज़ कर देने के काबिल क़रार देते हैं जैसे वह मज़हबी गुमराही हो, अपनी अक्ल में अपनी समझ पर बेइंतिहा भरोसा और दूसरे की समझ को मूर्खता पूर्ण या बचकाना समझते हैं, अपनी राय पर जम जाना, और दूसरे की राय को ध्यान देने के लायक भी न समझना एक ऐसा मर्ज़ है जो हमारे पूर्वी देशों में और मुसलमानों में बढ़ा हुआ है, इसकी वजह से हर एक अपनी राय पर अड़ता है और उसके मुक़ाबले में दूसरे के कौल व फ़ेल को मुकम्मल ना समझी क़रार देता है।

इसी का नतीजा है कि हमारे पूर्वी भाग में कोई संगठन हो या दल, कोई संस्था हो या मस्जिद उसके व्यवस्थापक एक नहीं रह पाते, अपनी अपनी राय को वरीयता देते हैं, इस हद तक बढ़ जाते हैं कि आखिर कार लड़ कर एक दूसरे से अलग हो जाते हैं, फिर एक दूसरे पर अपनी राय पर अड़ने वाला और नासमझी का आरोप लगाते हैं, और कट्टरता बढ़ती है तो ग़ैरों के सामने मुकदमे ले जाते हैं और अपने अपने अमल को अल्लाह के लिए क़ौम के लिए, दीन के लिए समझते हैं, और दूसरे के अमल को स्वार्थ और नफ्स परस्ती क़रार देते हैं, इस तरह हमारे सारे मिल्ली काम बिखराव का शिकार होते रहते हैं और वर्षों साथ काम करने वालों के दिल आपस में बुरी तरह जुदा हो जाते हैं अगर हम अपने अमल और अपनी राय में भी ग़लती और बुराई होने की संभावना महसूस करें और इस पर खुलूस से विचार कर लिया करें और दूसरे से मतभेद को सुलझाने का नर्म तरीक़ा अपनायें और मुस्लिम की इज़्ज़त और इन्सानियत के आदर को सामने रखने की कोशिश करें

शेष पृष्ठ ....40....पर

इस्लाम ग़लत फहमियों के साये में

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी —हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

आज कल कुछ लोग महज़ इस बिना पर इस्लाम से नफ़रत करते हैं कि उन्हें इस्लाम को अपनाने में अपना इक़्तिदार और बालादस्ती, अपने माद्दीअग़राज़ और जाती मफ़ादात को खतरा महसूस होता है, हालांकि यह ख़याल निहायत ही ग़लत है, और यह लोग सख़्त धोखे में हैं, इस्लाम हरगिज़ हरगिज़ इन्सानी हुकूक़ पर ज़ुल्म नहीं करता और न उस की सलाहियतों पर कोई बन्द लगाता है, इस्लाम हर इन्सान को उसका पूरा पूरा हक़ देता है। उसके मक़ाम व मर्तबा का लिहाज़ करते हुए तवाज़ुन व एतिदाल के साथ अख़्लाक़ी और इज्तिमाई तालीमात की रौशनी में उसे उसका हक़ फराहम करता है, इस्लाम उन ख़ुद साख़्ता निज़ामों और इन्सानी क़वानीन से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है, कुछ लोग इन्सान की ताक़त और उस की ज़िन्दगी का निहायत ग़लत इस्तेमाल करते हैं, और उसका इस क़द्र इस्तेहसाल करते हैं कि वह मुसीबत जदा रह कर दुन्या से चला जाता है, लेकिन आकाओं के घरों में दौलत के चश्मे बह रहे होते हैं, जिस निज़ाम में किसी मख़सूस तबक़ा के एक फर्द को हुक्मरानी सौंप दी जाती है और उसे पूरा इख़्तियार फराहम कर दिया जाता है कि वह अपनी ख़्वाहिश और मर्ज़ी लोगों पर थोपता रहे, ख़्वाह वह मुनतख़ब हाकिम, बदनाम ज़माना ही क्यों न हो और अपने सियाह कारनामों के साथ शोहरत रखता हो, वह निहायत बे बाकी के साथ मुल्क की सारी दौलत के दहाने अपनी ख़्वाहिश की जानिब फेर लेता है, और दिलचस्प बात तो यह है कि यह सब जम्हूरियत के खुशनुमा नाम से किया जाता है।

यह दौरे हाज़िर की जम्हूरियते, आमरियतें और सेकुलरिज़्म क्या हैं? कुदरत से बगावत करने वाले इन्सानी घरौंदे, जिनका अंजाम बिल आख़िर तबाही है, जो ऐसे ढ़ाँचे हैं जिनका जाहिर तो खुशनुमा है लेकिन अंदरून चंगेज़ से तारीक तर, उन तमाम इन्सानी निज़ामों के दोज़ख़ निहायत खुशनुमा, रौशन और चमकदार होते हैं सादा लौह अ़वाम और भोले भाले इन्सान उन के ज़ाहिरी चमक दमक को देख कर फरेब खा जाते हैं और उसके हामी बन जाते हैं दूसरा रुख़ निहायत बदनुमा और तारीक होता है, इस पर जाहिर दारियों का परदा पड़ा होता है, और खुफया मवाके पर वह अपना काम करता है, यह दूसरा रुख़ ही इस का हक़ीक़ी चेहरा है इसके इरादों का वह पाबन्द होता है, यह चेहरा कैसा है? नाजाइज़ नफा अंदोज़ी का चेहरा ज़ुल्म का चेहरा और हर क़िस्म के जुर्म का चेहरा, लेकिन यह चेहरा नुमायां नहीं होता, लोग इस चेहरा से वाक़िफ नहीं हो पाते और बेश्तर औक़ात तो उसकी शनाख़्त भी मुश्किल होती है।

इस्लाम इस मौक़े पर सामने आता है इस बदनुमा, तारीक और मुजरिमाना चेहरे से नक़ाब उठा देता है फिर दुन्या देख लेती है कि इस चेहरे का क्या हाल है, इस पर अनानीयत, नाजाइज़ कमाई और नफा अंदोज़ी व जराइम के कितने दाग लगे हुए हैं, इस्लाम इन्सान की हक़ीक़ी तस्वीर और उसका अस्ली रूप नज़रों के सामने पेश कर देता है, वह एलान करता है कि अल्लाह तआला ने इन्सान को तो वह मक़ाम बुलन्द अता किया जिसमें कोई दूसरी मख़लूक़ उस की शरीक नहीं अल्लाह तआ़ला का इरशाद है– ''यक़ीनन हम ने औलाद आदम को बड़ी इज़्ज़त दी, और उन्हें खुश्की और तरी की सवारियाँ दीं और उन्हें पाकीज़ा चीज़ों की रोजियाँ और अपनी सी मख़लूक़ पर उन्हें फज़ीलत अता फरमाई।

(बनी इसराईल–70)

इस्लाम तमाम इन्सानों को एक सफ में खड़ा करता है और उनके दिलों में हक़ीक़त नक़्श कर देता है कि सारी इन्सानियत एक आदम की औलाद है, और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की खिल्क़त मिट्टी से हुई थी, यह हक़ीक़त भी उनके दिलों में बिठा देता है कि फज़ीलत व बरतरी का मेयार सिर्फ तक़वा है, अगर तक़वा और ख़ुदा का ख़ौफ़ किसी के मर्तबा को ऊँचा करने का ज़रीआ न बन सके तो फिर किसी अरबी को अज़मी पर या अज़मी को अरबी पर इसी तरह किसी काले को गोरे पर या किसी गोरे को काले पर किसी क़िस्म की फ़ौक़ीयत हासिल नहीं, खुदाए जुलजलाल ने अपनी लाफानी किताब मुकद्दस में यह हक़ीक़त वा शग़ाफ कर दी है। फरमाया – ऐ लोगो! हमने तुम सब को एक मर्द व औरत से पैदा किया है, और इस लिए कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानों कुंबे और कबीले बना दिए हैं, अल्लाह के नज़दीक तुम सब में बाइज़्ज़त वह है जो सबसे ज़ियादा अल्लाह से डरने वाला हो, यकीन मानो कि अल्लाह दाना और बा ख़बर है। (हुजरातः13)

इस इस्लामी मसावात के नतीजा में जब तमाम इन्सान एक मुक़ाम व मर्तबा पर खड़े नज़र आते हैं और मेयार फज़ीलत महज़ तक़वा करार पा जाता है तो इस्लाम हर फर्द बशर को अक़ीदा व किरदार की बुन्याद पर अपनी सीरत की तामीर के मुकम्मल मवाक़े फराहम करता है और यही नहीं बल्कि अपनी क़बाए किरदार को आरास्ता करने के लिए फज़ाइल व महासिन के ज़र्री तुक्मे भी मुहय्या करता है और उस सीरत को दागदार बना देने वाली छोटी बड़ी तमाम चीज़ों से मुतनब्बेह कर देता है, कुर्आन हकीम इस कीमती हिदायत को उन अल्फ़ाज़ में बयान करता है– और तुम्हें जो कुछ रसूल दे, ले लो और जिससे रोके रुक जाओ। (हश्र–7)

गोया इस्लाम ने पैग़म्बरे इस्लाम की मुबारक ज़िन्दगी की सूरत में एक मुकम्मल आईडियल फराहम कर दिया है, आप की जामे हयात तय्यिबा के हर गोशा में रहनुमाईयां बिखरी हुई हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत, अख़्लाक़,

आमाल व अक़वाल, इर्शादात और अहकामात ग़रज़ मुख़्तलिफ़ सूरतों में निहायत वज़ाहत और तफ़सील के साथ तालीमात व हिदायत दी गई हैं, कुर्आन मजीद का इरशाद है – यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्ल0 में उम्दा नमूना मौजूद है, हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला की और क़ियामत के दिन की तवक़्क़ो रखता है और बकसरत अल्लाह को याद करता है।

(अहज़ाब)

इस पाकीज़ा सीरत के साँचे में ढलने और उस अस्वा व नमूना को ज़िन्दगी के हर गोशा में अपना लेने के बाद सच्ची कामयाबी और सआदत यक़ीनी है, इस नमून–ए–ज़िन्दगी और पैकरे हयात के सामने आने के बाद कोई भी इन्सान इस्लाम से नफ़रत नहीं कर सकता, इसके हाशिए ख़याल में भी इस्लाम बेज़ारी का कोई नक्श नहीं उभरेगा, क्योंकि इस्लाम की यह अमली तस्वीर और उसका सच्चा रूप इन्सानी फितरत की मता–ए–गुमशुदा है, इन्सान अपनी तबीअ़त व फितरत के ऐन तक़ाजों को पा कर एक कैफ़ व लज़्ज़त महसूस करता है, एक रूहानी सुरूर जिस का इज़हार अल्फ़ाज़ में नहीं किया जा सकता, इस जौहरे नायाब को पा लेने के बाद क्यों किसी इन्सान को कोई डर और ख़ौफ़ महसूस होगा और क्यों उसे दो रुखा पन इख़्तियार करने की ज़रूरत पेश आयेगी, वह मुनाफ़िक़ाना रवैया की मौक़ा व मनफअत के लिहाज़ से एक चेहरा को ज़ाहिर करे और दूसरे को छिपाये उसे चन्द खनखनाते सिक्के और उहदा व कुर्सी अपना असीर नहीं बना पाते, वह अपनी मामूली अग़राज़ की खातिर जम्हूरियत, इश्तिराकियत और सेकुलरिज़्म के झूटे नारों के हथियार इस्तेमाल करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं करता।

वाक़िआ है कि इस्लाम के साये तले इन्सान को सुकून मुसर्रत और क़ल्बी शादमानी की अजीब और अज़ीम दौलत नसीब होती है, एक अंदरूनी फरहत व इत्मीनान उसे बे खुद किए रहता है, इस शब व रोज़ अम्न व आ़फियत के साए में बसर होते हैं, उन खुशयों में निहाल हो कर वह उहदा व कुर्सी और माल व दौलत को भुला देता है, बल्कि अगर यह चीजें इस के क़दमों पर आकर गिरती भी हैं तो वह उन्हें कमाल बे नियाज़ी से ठुकरा देता है, ज़िन्दगी की मसर्रतों को बे मज़ा नहीं करना चाहता, अगर कुछ क़बूल करता भी है तो महज रब को खुश करने और ज़मीर मुतमइन करने की ख़ातिर, अपनी दीनी और ईमानी ज़िम्मेदारियों को अंजाम देने की ग़रज़ से और अपने फराइज़ को अदा करने के मक़सद से।

ऐ काश! आज लोगों ने इन तालीमात और इन बेमिसाल हिदायात की रौशनी में इस्लाम को समझा होता, इस्लाम के ख़िलाफ फैलाए जाने वाले झूटे प्रोपगण्डों अफ़वाहों और बे जा ख़ौफ़ के दबीज़ परदों को अपने ज़िहन व दिमाग़ से नोच कर फेंक दिया होता और फिर बसीरत की बे दाग़ रौशनी में हक़ीक़त तक पहुँचने की कोशिश करते। ◆◇◆

रोज़ा और ईदुलफित्र

—हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

रोज़ा इस्लाम के पाँच बुन्यादी स्तम्भों में से एक बुन्यादी स्तम्भ है, यह बुन्यादी स्तंभ इस्लाम के वह सुतून हैं जिन पर दीने इस्लाम की इमारत काइम है, उनमें से हर सुतून की हिफाज़त ज़रूरी है ताकि दीने इस्लाम की इमारत काइम रहे, इस्लाम के एक मौलिक स्तंभ होने के साथ रोज़े की जो विशेषतायें और उपलब्धियां हैं उन से इन्सान अपनी प्राकृतिक भाव के लिहाज से गौर करे तो उसको उसमें अपनी ज़िन्दगी के लिए अनेक रौशन पहलू नज़र आयेंगे, उच्च इंसानी गुणवत्ताओं पर अमल करने के लिए अपनी स्वार्थप्रताओं को दबाने और अपने स्वार्थ और अभिलाकों को नज़र अंदाज़ करके अपने परवरदिगार के आदेशों का पालन करना उसके अहम पहलू हैं, रोज़े के ज़रिये इन्सान एक ओर अंदुरूनी खूबियों से सुसज्जित होने का प्रयास करता है, और दूसरी ओर दूसरों के दुख व परेशानी को अपने तजुर्बे में ला कर अपने अंदर हमदर्दी और रहम दिली के एहसास को जगह देता है।

कुर्आन मजीद में उसकी अहमियत और उसमें भलाई के इंसानी जज़्बे की शक्ति, इन्सानी हमदर्दी, और मन की इच्छा शक्ति को कंट्रोल करने के उद्देश्य की ओर खुला इशारा किया गया है और एक साल में एक माह उसकी ट्रेनिंग के लिए निर्धारित करते हुए उसकी यह फज़ीलत भी बताई गई है कि अल्लाह तबारक व तआला की मुकद्दस किताब कुर्आन मजीद का नुजूल भी इसी मास में हुआ अल्लाह का इरशाद है—

अनुवाद— *"ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज किये गये जैसे कि उन लोगों पर फर्ज किये गये थे जो तुम से पहले हुए हैं अजब नहीं कि तुम मुत्तकी (परहेजगार) बन जाओ, गिन्ती के चंद रोज़ हैं लेकिन तुममें से जो शख़्स बीमार हो या सफर में हो तो वह दूसरे दिनों में गिंती पूरा करले, और जो लोग उसे मुश्किल से बर्दाश्त कर सकें उनके जिम्मे फिदया है कि वह एक मिसकीन को खाना खिलायें, जो कोई खुशी खुशी नेकी करे वह उसके हक़ में बेहतर है, और अगर तुम इल्म रखते हो तो बेहतर तुम्हारे हक़ में भी है कि रोज़े रखो। माहे रमजान वह है जिसमें कुर्आन उतारा गया, जो लोगों को हिदायत करने वाला है और जिसमें हिदायत की, और हक व बातिल की फर्क करने वाली निशानियां हैं, तुम में से जो शख्स इस महीने को पाये उसको रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो बीमार या मुसाफिर हो उसे दूसरे दिनों में यह गिन्ती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह तआला का इरशाद तुम्हारे साथ आसानी का है सख़्ती का नहीं वह चाहता है कि तुम गिन्ती पूरी कर लो और अल्लाह तआला की दी हुई हिदायत पर इस प्रकार की बड़ाईयाँ बयान करो औरउसका शुक्र करो।*

(सू—रए—बकरः 183—185)

रोज़े की शैली तथा उसकी बनावट ऐसी रखी गयी है कि उससे फरिश्तों जैसी जिन्दगी उभरती है, फरिश्ते अल्लाह तआला की वह मखलूक़ हैं जो न खाते हैं, न पीते हैं, और न उनको

ज़मीनी प्राणियों की भांति जमीनी ज़रूरियात पेश आती हैं, वह हर समय अल्लाह तआला की ओर ध्यान जमाये उसकी इबादत व आज्ञाकारी में लगे रहते हैं, न थकते हैं और न नाफरमानी करते हैं, रोज़ेदार की जिन्दगी मुम्किन हद तक ऐसी ही जिन्दगी बन जाती है।

जमीनी प्राणी का व्यक्ति होने की वजह से उसको यक़ीनी तौर पर इंसानी ज़रूरतें तो पूरी करनी होती हैं लेकिन दूसरे मुम्किन और इख्तियारी मुआमलात में रोज़ादार फरिश्तों की तरह इबादत व इताअत में लगा रहता है, न खाता है न पीता है और न कोई नाफरमानी करता है।

रोज़ादार इस प्रकार की जिन्दगी इख्तियार करने में कामयाब और मक़बूल रोज़ादार साबित होता है और उसमें कोताही तथा सुस्ती करने में कोताही के समान रोज़े के लाभ से वंचित हो जाता है। रोज़े का यह जमाना चूंकि सारे मुसलमानों के लिए एक ही समय में आता है इसलिए एक साधारण दृश्य और माहौल बन जाता है, और ऐसा माहौल बनाने की ताकीद भी आई है यहां तक की बीमारी या सफर की वजह से रोज़ा न रख सकने वाले को भी ताकीद है कि वह खुल्लम खुल्ला अपने रोज़े न रखने का प्रदर्शन न करें ताकि रोज़े की फिज़ा मुतअस्सिर न हो।

मुसलमानों को इस रूहानी अमल के जरिए अपनी जिन्दगी का जाइज़ा लेने का मौक़ा मिलता है उनका उद्देश्य रूहानी मख्लूक फरिश्तों की तरह जिन्दगी इख्तियार करना होता है, उनकी एक प्रकार समानता इख्तियार करनी होती है उनको यह देखना होता है कि वह कहां तक इस उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं और अगर उनसे कुछ कमी व कोताही है तो वह उसको दूर करने की क्या कोशिश करते हैं, वह अपनी पूर्ण दिनचर्या में फरिश्ते तो नहीं बन सकते लेकिन कम से कम उनको जो थोड़ा मौक़ा इसके प्रदर्शन का मिल रहा है, उससे अपनी ताकत भर लाभ उठा सकते हैं, और अपने मालिक की रहमतों और रज़ामंदियों से माला माल हो सकते हैं।

अल्लामा इब्ने क़ैइम रोज़े के हिकमतो मक़ासिद पर रौशनी डालते हुए लिखते हैं–

रोज़ा जाहिरी व अंदरूनी अंगों की हिफाजत में बड़ी तासीर रखता है, खराब तत्व के जमा हो जाने से इन्सान में जो खराबियां पैदा हो जाती हैं, उससे वह उसकी हिफाजत करता है जो चीजें स्वास्थ के लिए हानिकारक हैं उनको निकाल देता है और जिस्म के दूसरे अंगों में जो खामियां गलत इच्छाओं के नतीजे में जाहिर होती रहती हैं वह रोज़े से खत्म होती हैं, वह स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद और तक़्वे व परहेज़गारी की ज़िन्दगी इख्तियार करने में बहुत मददगार है, अल्लाह तआला का इरशाद है–

''ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फर्ज किये गये जैसा कि उन लोगों पर फर्ज किये गये थे जो तुमसे पहले हुए हैं अजब नही कि तुम मुत्तकी व परहेजगार बन जाओ''।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया–

''अस्सौमुजुन्नतुन'' रोजा ढ़ाल है, चुनानचे ऐसे आदमी को जो निकाह का ख्वाहिशमंद हो और ताकत न रखता हो, उसको रोजा रखने की हिदायत की गयी है और उसको इसका विषनिकारक

करार दिया गया है, मक़सद यह है कि रोज़े के फवाइद चूंकि अक्ले सलीम और फितरते सहीहा के एतिबार से सिद्ध थे इसलिए इसको अल्लाह तआला ने अपने बंदों की हिफाजत के खातिर सिर्फ और सिर्फ अपनी रहमत और एहसान से फर्ज किया है।

(जादुल मआ़द 1/52)

हमारी आम ज़िन्दगी तो दीनी कमज़ोरियों और अमली कोताहियों से भरी हुई है, दुन्यावी राहतों और लज्जतों की फिक्र, दुन्यावी फवाइद के हुसूल की फिक्र, हर समय नफ्स की ख्वाहिशात की फिक्र, अपने शौक व ख्वाहिश के असर से दूसरों के साथ ज़ियादती व हकतल्फी, किसी की गीबत, हमारी ज़िन्दगी कमोबेश इन तमाम बातों से दागदार रहती है, साल भर में सिर्फ एक महीना हम को दिया गया है कि हम इन तमाम बुरी और नामुनासिब बातों से परहेज़ की मश्क करें, और कोशिश करें कि हमारी ज़िन्दगी इन सब बातों से जितना मुम्किन हो पाक हो, अगर इसमें कामयाब होते हैं तो यह फरिश्तों के कारनामे से बड़ा कारनामा होगा, क्योंकि फरिश्ते ऐसा करने पर प्राकृतिक तौर से मजबूर हैं, लेकिन हम ज़मीनी मख्लूक़ होने के बाइस प्राकृतिक तौर पर मजबूर नहीं हैं, हम अपने इरादे और फिक्र मंदी से इसको इख्तियार करेंगे, फरिश्तों को ऐसी हालत के लिए कुर्बानी नहीं करनी पड़ती, हम मेहनत व कुर्बानी से उसको इख्तियार कर सकेंगे, इसलिए इंसान अगर फरिश्तों जैसी हालत इख्तियार करे तो उसका मकाम व मर्तबा फरिश्तों से बढ़ जाता है।

कुर्आन मजीद को इस माह के साथ खास तअल्लुक़ है, खुद अल्लाह तआला ने इस माह की यह अज़ीम खुसूसियत बताई है कि इसमें कुर्आन मजीद नाज़िल हुआ, अल्लाह ने फरमाया 'रमजान का यह महीना ऐसा है कि इसमें कुर्आन मजीद नाज़िल किया गया जो लोगों को भलाई की ओर रहनुमाई करने वाला है और उसमें हिदायत की रौशन बातें हैं और हक़ व बातिल के दरमियान फर्क वाजेह करने वाला है''

(सू–रए–बकरः 185)

हज़रत मुजद्दिद अल्फे सानी रह0 अपने एक खत में लिखते हैं ''इस महीने को कुर्आन मजीद के साथ बहुत खास मुनासबत है, कुर्आन मजीद इसी माह में नाज़िल किया गया, यह महीना हर क़िस्म की खैरो बरकत का योग्य है, आदमी को साल भर में सामूहिक तौर पर जितनी बरकतें हासिल होती हैं वह इस मास के सामने इस प्रकार हैं जिस तरह समुद्र के मुक़ाबले में एक कतरा, इस महीने में दिल के सुकून का हुसूल पूरे साल दिल के सुकून के लिए काफी होता है और उसमें इंतिशार और दिल की परेशानी बचे हुए तमाम दिनों बल्कि पूरे साल को अपनी लपेट में ले लेती है, काबिले मुबारकबाद हैं वह लोग जिनसे यह महीना राज़ी हो कर गया, और नाकाम और बदनसीब हैं वह जो उसको नाराज़ करके हर किस्म के खैरो बरकत से महरूम हो गये। एक दूसरे खत में फरमाते हैं–

''अगर इस महीने में किसी आदमी को आमाले सालिहा की तौफीक़ मिल जाये तो पूरे साल उसको शामिले हाल रहेगी और अगर यह महीना बेअदबी फिक्रो तरद्दुद और इंतिशार

के साथ गुज़रे तो पूरा साल उसी हाल में गुज़रने का अंदेशा है'' (मक्तूबात द्वारा इमाम रब्बानी 1/8/45)

रोज़े की इफादियत और अल्लाह के नज़दीक उसकी अहमियत की यह बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे आमाल के मुक़ाबले में इससे अपनी पसंद ज़ियादा जाहिर की है, हदीस शरीफ में अल्लाह तआला का यह इरशाद बताया गया है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने रोज़े की अहमियत और कद्रो कीमत बयान करते हुए इरशाद फरमाया कि आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ाया जाता है, मगर अल्लाह तआला का इरशाद है कि रोज़ा इस आम नियम से अलग और ऊपर है, वह बन्दे की ओर से खास मेरे लिए एक तोहफ़ा है, और मैं ही जिस प्रकार चाहूंगा उसका अज्र व सवाब दूंगा मेरा बन्दा मेरी रिजा के वास्ते अपनी ख्वाहिशे नफ्स और अपना खाना पीना छोड़ देता है तो मैं खुद ही अपनी मर्जी के मुताबिक उसकी इस कुर्बानी और नफ्स कुशी का भरपूर और अजीम बदला दूंगा। (बुखारी–मुस्लिम)

रोज़ों का यह एक महीना मुसलमानों की ऐसी दीनी दौलत है जिससे उनको अनेकों प्रकार के लाभ हासिल होते हैं, इबादत की अदाइगी के साथ साथ मुसलमानों की सामाजिक जिन्दगी के अनेक भाग इस्लाह व दुरुस्तगी के अमल से गुजरते हैं, आपस की हमदर्दी गमख्वारी, एक दूसरे की मदद और इंसानी एहसासात की सही कार फरमाई का यह बेहतरीन मौक़ा होता है, चुनांचे रमज़ान के जमाने को सही ढंग से गुजारने के बाद एक मुसलमान इबादत की शानदार अदायगी के साथ गफ़लतों, इंसानी क्रोधों और सख्त मिज़ाजी की कैफियत से पाक हो कर निकल सकता है, रोजेदार को एक माह तक उन तमाम बातों से परहेज़ करना होता है जो इंसान के नफ़्स को मोटा और उसकी तबीअ़त को अच्छे इन्सानी अख़्लाक़ से दूर कर देती हैं, इसको एक ओर अपने परवरदिगार के सामने बंदगी की जिम्मेदारियों को अंजाम देने का भरपूर मौक़ा मिलता है, तो दूसरी ओर अपनी इंसानी बिरादरी के साथ हमदर्दी और दिलदारी के हुकूक़ भी अदा करने होते हैं, बन्दगी के इज़हार में इबादत के अमल के साथ अपने परवरदिगार के हुक्म के सामने अपनी राहत और अपनी मर्जी को कुर्बान करना होता है, इस कुर्बानी में नफ़्स की कुर्बानी भी होती है और बदनी आराम की भी कुर्बानी होती है, उसके इख्तियार किये मामूलात में फ़र्क ले आया जाता है, खाने पीने के वक़्फ़ों को लंबा कर दिया जाता है और उनके औक़ात में भी तबदीली कर दी जाती है, वह जिस समय खाना खाता था उस समय उसको रोक दिया जाता है और जिस समय वह उमूमन नहीं खाता उस समय उसको खाने का समय बताया जाता है, उसके लिए तुलूऐ फज्र से पहले जब कि उसके उठने से कम से कम घण्टा दो घण्टा पहले का होता है उठ कर खाना खाया जाता है, और जब कि वह दिन में अपने आराम के मुताबिक खाना खाया करता है लेकिन रोज़े की हालत में उस को मना कर दिया जाता है, फिर सूरज डूबते ही उसको खाने

की सिर्फ इजाज़त ही नहीं मिलती बल्कि उस समय उसके लिए यह काम अज्र व सवाब का काम करार दिया जाता है, फिर यह सिलसिला पूरे एक माह चलता है, इस लिससिले में खाने के अलावा पानी पीने को भी शामिल किया जाता है, इस तरह रोजेदार को अपने परवरदिगार के हुक्म पर भूका प्यासा रहना होता है और फिर उसी के हुक्म से खाना पीना इख्तियार करना होता है, रोज़े की यह पाबंदियां अपनी तरह की खास प्रकार की पाबंदियां हैं।

ईदुलफित्र–

रमजान के 29 या 30 दिन ऐसे नूरानी माहौल व हालात में गुजर कर ईदुलफित्र का दिन आता है, जो लुत्फो इबादत और आराम व कुबूलियत दोनों को समेटे हुए आता है, इसमें दुन्यावी और दीनी दोनों तरह से खुशी का सामान होता है एक ओर तो उसको अपनी जाइज़ पसंद व ख्वाहिशात के मुताबिक जिन्दगी गुज़ारने की आज़ादी मिलती है, और दूसरी ओर पूरे एक माह इताअ़त व फरमांबरदारी और इबादत के अज्रो सवाब का फैसला होता है और उसको उसके इन्आम से नवाज़ा जाता है इस बिना पर ईद की रात को ''लैलतुल जाइज़ा'' इनाम की रात कहा गया है। रमज़ान अपने हक अदा करने वाले को ऐसी पाकीज़गी अता कर देता है जो उसके लिए साल भर के लिए तोश–ए–बरकत व रहमत बनती है और साल गुज़रने पर फिर इस मुबारक अमल का मौक़ा आ जाता है और खैर व बरकत का यह प्रोग्राम दोहराने का अवसर आ जाता है।

रमज़ान का महीना एक मुसलमान को इस बात के एहसास से वाक़िफ करा देता है कि इस ज़मीन पर कितने ऐसे आदमी हैं जो इंसानी रिश्ते से उसी की तरह हैं लेकिन उनको भूख बर्दाश्त करना पड़ती है और कितने ऐसे हैं जिनको उनके इंसानी तक़ाज़ों को पूरा करने का सामान हासिल नहीं, रमजान यह भी बताता है कि आदमी को अपने इर्द गिर्द रहने वाले अपने ही तरह के लोगों की तकलीफ और दुख को जानना चाहिए, और उसमें उसको उनकी कुछ न कुछ हमदर्दी भी करना चाहिए, इसीलिए ज़रूरतमंद की मदद भूखे आदमी को खाना खिलाना, रमज़ान के बहुत पसंदीदा कामों में करार दिया गया है, और जब इंसान रोजा रख कर भूख की तकलीफ से गुज़रता है तो यक़ीनन इसका एहसास होता है कि भूख क्या चीज़ है और उसमें हमदर्दी कैसा शानदार काम है और रोजा रख कर जब वह नफ़्स के अनेकों तक़ाज़ों से अपने को बाज़ रखने पर मजबूर होता है तो उसको इस बात की ट्रेनिंग का अवसर मिलता है कि वह बुरी बातों से अपने नफ़्स को रोके जो निन्दा योग्य और अच्छी और नेक ज़िन्दगी से मेल नहीं खाती हैं, इस प्रकार रमज़ान इंसान को अच्छा नेक और पाकीज़ा बनाने का एक कार्य पद्धति लेकर आता है जो इंसान के लिए एक ज़रूरी व्यवस्था है जिसमें इंसानों की बेहतरी और खूबी का इंतिजाम होने के साथ उसके परवरदिगार की खुशनूदी और रज़ामंदी का भी इंतिजाम है जिसका एक इनआ़म ईदुलफित्र की खुशी, और अस्ल इनआ़म परवरदिगार की खुशनूदी का हुसूल उसकी ओर से खुसूसी इनआ़म है।

रोज़ों की कार करदगी

वाक़ई एक आला कारकरदगी है जिसके बारे में खुदा तआला ने फरमाया कि हर अमल का बदला तो उस प्रकार दिया जायेगा जैसा मुकर्रर किया गया है, लेकिन रोज़े का बदला मैं स्वयं खास प्रकार से अपनी ओर से दूंगा, इस लिए शैतान का ईद के दिन रोज़ा रखना और गम करना ठीक है कि उसके शिकार से कितने इंसान न सिर्फ यह कि बच निकले बल्कि उसकी तदबीर व कोशिश को बरबाद कर गये, और रोज़ेदारों की खुशी भी ठीक है कि उन्होंने अपने को शैतान के नरगे से बचा लिया और अपने परवरदिगार को राज़ी व खुश किया, वह अपने परवरदिगार की अज़मत व बड़ाई और खुदा के एक होने का कलिमा पढ़ते हुए ईद के दिन नमाज़ के लिए जाते हुए यह अलफाज़ अदा करते हैं–

"अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाहा इल्लल्हाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द''

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है उसके अलावा कोई माबूद नहीं, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है हर प्रकार की तारीफ व खूबी उसी के लिए है, और इस प्रकार से वह शैतान के रोज़े को और भी सख्त और तकलीफ का रोज़ा बना देते हैं। ◆◇◆

गर्मी का मौसम

मई का आन पहुंचा है महीना – बहा चोटी से ऐड़ी तक पसीना
बजे बारा तो सूरज सर पर आया – हुवा पैरों तले पोशीदा साया
चली लू, और कड़ाके की पड़ी धूप – लपट है आग की गोया कड़ी धूप
ज़मीन है या कोई जलता तवा है – कोई शोला है या पछुवा हवा है
दरोदीवार हैं गर्मी से तपते – बनी आदम हैं मछली से तड़पते
परिन्दे उड़के हैं पानी पे गिरते – चरिन्दे भी हैं घबराये से फिरते
दरिन्दे छुप गये हैं झाड़ियों में – मगर डूबे पड़े हैं खाड़ियों में
न पूछो कुछ ग़रीबों के मकां की – ज़मीं का फ़र्श है, छत आसमां की
न पंखा है, न टट्टी है न कमरा – ज़रा सी झोपड़ी, मेहनत का समरा
अमीरों को मुबारक हो हवेली – ग़रीबों का भी है अल्लाह बेली

पोशीदा–छुपा हुआ, कड़ाके–गर्मी की सख़्ती, शोला–आग की लपट, बनी आदम–इन्सान, परिन्दे–उड़ने वाले, चरिन्दे–चरने वाले, दरिन्दे–फाड़ खाने वाले, समरा–फल, हवेली–बड़ा मकान, अल्लाह बेली– अल्लाह हाफ़िज़।

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: ज़क़ात कितने माल पर फर्ज़ है?

उत्तर: ज़क़ात हर उस आक़िल बालिग मुसलमान पर फर्ज़ है जो निसाब का मालिक हो निसाब में चांदी और सोने को मेयार बनाया गया है, जिसके पास दो सौ दिरहम अर्थात 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी हो या इतनी चांदी खरीदने के पैसे हों उसको निसाब का मालिक (साहिबे निसाब) कहेंगे। अगर उसके पास चांदी बिल्कुल नहीं है और सिर्फ सोना बीस मिस्काल अर्था 87 ग्राम 470 मिली ग्राम या उससे ज़ियादा है वह भी साहिबे निसाब है।

अगर किसी के पास चांदी भी है और सोना भी मगर दोनों निसाब से कम वजन में है तो दोनो की कीमतों का अन्दाजा लगा कर अगर उस की मजमूई कीमत से 612 ग्राम 282 मिली ग्राम चांदी खरीदी जा सकती है तो वह भी साहिबे निसाब है और उस पर ज़क़ात फर्ज है।

साहिबे निसाब के माल पर जब साल गुज़र जाए तो वह अपने माल का चालीसवां हिस्सा यानी ढ़ाई फीसद निकाल कर गरीब मुसलमान (जो साहिब निसाब न हों) को दे।

साहिबे निसाब जब तक साहिबे निसाब रहेगा उस को हर साल इसी तरह ज़क़ात निकालना होगी उसे चाहिए कि साल में कोई एक महीना ज़क़ात के हिसाब के लिए मुकर्रर कर ले और बेहतर होगा कि रमज़ान के महीने में अपने माल की ज़क़ात का हिसाब किया करे।

याद रहे सय्यिदों को ज़क़ात नही दी जा सकती चाहे वह मिस्कीन ही क्यों न हों उन की मदद दूसरे माल से करना चाहिए इसी तरह अपने बाप, दादा, नाना, मां, दादी नानी और अपनी औलाद को भी ज़क़ात नहीं दे सकते, गरीब चाचा, चाची, फूफा, फूफी, मामू, मुमानी, खालू, खाला बीवी की मां बाप अपने ग़रीब भाई बहन को ज़क़ात दे सकते हैं गैर मुस्लिम को भी ज़क़ात नहीं दे सकते हैं। उनकी मदद दूसरे माल से करना चाहिए।

प्रश्न: अगर भवों के बाल लम्बे हों तो उनको काटना शरअन दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: कुर्आन भवों के बाल अगर ज़ियादा लम्बे और घने हों जाएं जिससे चेहरा बद नुमा महसूस हो तो उन बालों को काटना दुरुस्त है, इस सूरत में ऐब का इज़ाला है जिसकी शर्अ़ इस्लामी में इजाज़त है, अलबत्ता बिला ज़रूरत काटना और बारीक करना जैसा कि मौजूदा दौर में एक फैशन हो गया है, दुरुस्त नहीं है, हदीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में उसकी मुमानअ़त आई है, इमाम अबू दाऊद रह0 ने हदीस नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नक़्ल करने के बाद ''अन्नामिसतो'' लफ़्ज़ की तश्रीह फरमाई कि नामसा उस औरत को कहते हैं जो

भवों को बारीक करती है। (सुन्ने अबू दाऊदः 2/218)

प्रश्नः बाज़ औरतों की आँखों की पलकें गिर जाती हैं, वह चाहती हैं कि मसनूई पलकें लगवाएं तो क्या शरअ इस्लामी में इसकी इजाज़त है?

उत्तरः इन्सानी वजा क़ता और जेब व जीनत के बारे में इस्लाम ने एतिदाल को पसंद किया है, बेएतिदाली पसंदीदा नहीं है, यही वजह है कि इज़ाला ऐब के लिए कोई मोतदिल तरीक़ा इख्तियार करना दुरुस्त करार दिया है, लेकिन जीनत में बे एतिदाली और हद से आगे बढ़ना नापसंदीदा और ममनू बताया गया है, बुख़ारी शरीफ की रिवायत है कि हज़रत अस्मा बिन्त अबी बक्र रज़ि0 फरमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाल लगाने वाली और लगवाने वाली पर लानत फरमाई है।

(सही बुखारी–5936)

"वासिलः" इन्सानी बाल को अपने या गैर के बाल से जोड़ने वाली औरत को कहते हैं और "मुसतौसिला" जुड़वाने वाली औरत कहलाती है। अल्लामा इब्ने आबदीन शामी और दीगर फुक्हा ने इसकी इल्लत और वजेह तजवीर (धोखा) देना बताया है।

(फतावा शामीः 6/373)

प्रश्नः बाज़ लोगों को सीना, पेट, पीठ और दीगर मक़ामात पर बाल होते हैं और इस क़द्र ज़ियादा होते हैं कि उलझन होती है क्या यह बाल साफ किये जा सकते हैं?

उत्तरः सर, चेहरा, मोंछ, नाक, बगल और ज़ेरे नाफ बालों की सफाई या कमी या कतरना मस्नून है और हफ़्ता में एक बार मुस्तहब है, अलबत्ता सीना, पेट, पीठ या रानों के बाल साफ़ करने को फुक़्हा ने ख़िलाफ अदब लिखा है। यानी ज़रूरत हो तो साफ करने की गुंजाइश है वरना बिला ज़रूरत बेहतर नहीं। (सहीह मुस्लिम–258)

प्रश्नः आम तौर पर लोग सर के बाल कटाते वक़्त गर्दन के बाल साफ करवाते हैं क्या गर्दन के बाल मुंडवाने की इजाज़त है?

उत्तरः गर्दन के बाल जो कानों की लौ के नीचे होते हैं, उनको कटवाना या मुंडवाना दुरुस्त है।

प्रश्नः क्या औरतें अपने ज़ाइद बालों को उस्तुरे या ब्लेड से साफ कर सकती हैं?

उत्तरः औरतों के लिए ज़ाइद बाल उस्तुरे या ब्लेड से साफ करना दुरुस्त है, अलबत्ता जेरे नाफ बाल उनके लिए उखाड़ना बेहतर है, आजकल इसके लिए खास क़िस्म की क्रीम आती है, इनका इस्तेमाल भी दुरुस्त है, इमाम नव्वी रह0 ने इस मसअला में बडी तफ़्सीलात बयान की हैं, तफ़्सील वहां देखी जा सकती है।

(1/128, बाब खसालुल फितरतो)

प्रश्नः बगल के बालों का उखाड़ना बेहतर है या मूँडना?

उत्तरः बग़ल के बालों की सफाई के सिलसिले में जो अहादीस हैं उनसे मालूम होता है कि उखाड़ना बेहतर है, बड़े बड़े फकीहों के यहां भी यही सराहत मिलती है। हाँ! अगर किसी के लिए उखाड़ना बाइसे तकलीफ़ हो तो मूंडना भी जाइज़ है।

(मजमउल अनहार शरह मुलतकीयुल अकबरः 4/224)

प्रश्नः औरत के चेहरे पर ग़ैर ज़रूरी बाल मसलन दाढ़ी, मोंछ वगैरा के बाल जाहिर हो जाएं तो साफ करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः औरत के लिए अपने चेहरे के गैर ज़रूरी बाल साफ़ करना दुरुस्त है, अल्लामा ऐनी शारेह सहीह बुख़ारी ने उमदतुल कारी में लिखा है कि अगर औरत के चेहरे पर दाढ़ी या मोंछ के बाल निकल आएं तो उनको मूंडना हराम नहीं है बल्कि मुस्तहब है।

प्रश्नः अगर जवान आदमी के सर में चन्द सफ़ेद बाल आ जाएं तो उनका चुनना और निकालना दुरुस्त है?

उत्तरः अगर नवजवान शख़्स के चन्द सफेद बाल आजायें तो ऐब को दूर करने के इरादा से निकालने में कोई हर्ज नहीं लेकिन ज़ीनत की गर्ज़ से ऐसा करना मकरूह है। (रद्दुल मुहतारः 6/407)

❖❖❖

रमज़ान का अन्तिम .....

अगर खाने का प्रबन्ध मस्जिद में न हो सके तो खाना खाने के लिए घर जा सकते हैं, पाखाना पेशाब या फर्ज़ गुस्ल के लिए मस्जिद से निकलेंगे वुज़ू के लिए भी वुज़ूखाने तक जा सकते हैं वह पूरा हो जाने पर मस्जिद में आ जाएं, बाहर रुकें नहीं, बाक़ी अवक़ात मस्जिद में इबादत में गुज़ारे या नींद आये तो सो जाएं, पाँचों नमाज़ें जमाअ़त से पढ़ें नफलें पढ़ें, तिलावत करें, नबी सल्ललाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ें और खूब दुआएं करें घर वालों के लिए दुआएं करें उम्मत के लिए दुआएं करें, मुल्क के लिए दुआऐं करें, एअ़तिकाफ करने वाला बहरहाल लैलतुलक़द्र से लाभांवित होता है, अल्लाह तआ़ला एअ़तिकाफ की तौफीक़ से नवाज़े, आमीन।

याद रहे शरई ज़रूरत के बिना मस्जिद से निकलते ही एअ़तिकाफ टूट जायेगा, जिस शरई ज़रूरत से निकले उसके पूरा हो जाने के बाद बाहर रुके रहे तो एअ़तिकाफ टूट गया, जब एअ़तिकाफ टूट गया तो एअ़तिकाफ सुन्नत की अदायगी नहीं हुई न उसका सवाब मिला, अलबत्ता जो इबादतें कीं उनका सवाब मिला, अब चाहे तो मस्जिद से निकल आये या नफ़्ल एअ़तिकाफ़ की नीयत कर ले और चाँद दिखने तक मस्जिद ही में रहे, नफ़्ल एअ़तिकाफ का सवाब लें, ज़ाइद इबादतों का सवाब लें, अल्लाह तौफीक़ से नवाज़े।

आमीन।

❖❖❖

—पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

—मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0 —अनुवादकः मौलाना मु0 जुबैर अहमद नदवी

दस्तीमान क्या है ?

शायद इसी से लिया हुआ वह रिवाज है जो गैर अरब बाशिंदों में ''दस्तीमान'' या ''दस्तफिमान'' के नाम से शायद कुछ अरब देशों के अंदर कम से कम अल्लामा शामी (रह०) के दौर तक जारी रहा। और हो सकता है कि अब तक प्रचलित हो, मतलब उन फिक्ह के माहिर हजरात ने यह बताया है कि पैगाम देने वाला (लड़का) लड़की या उसके अभिभावकों के पास मेहर के अलावा एक अच्छा खासा पैसा इस लिए भेजता था कि इससे लड़की के ''दहेज'' का सामान खरीदा जाए फिर वह सामान निकाह बाद पति के घर भेज दिया जाए ,ऐसी हालत में पति को शरीयत के अनुसार यह हक पहुँचता था कि ''दहेज'' ना लेन की हालत में वह उस लड़की के अभिभावकों से दस्तीमान के बराबर ''दहेज'' की मांग कर सके क्योंकि अल्लामा शामी के शब्दों वह दर असल ''हिबा बिशरतिल इवज'' है यानी ''दस्तीमान'' के नाम से जो पैसे लड़की या उसके अभिभावकों को भेजी थी, वह इसी काम केलिए भेजी थी, (यानी इस पैसे से सामान खरीदने के लिए उनकी हैसियत एक तरह के वकील की सी होती थी) इस मसले का सबसे ज़ियादा विवरण ''कनिययह'' और ''बहरूरराइक'' में मिलती है, वहां से लेकर ''दुर्रे मुख्तार'' के लेखक और उसके व्याख्याकार अल्लामा इब्ने आबिदीन ने अपनी अपनी किताबों में कुछ छांट भटक और समीक्षा करने के बाद जगह दी है।

सारांश यह कि पति के भेजे या दिए हुए पैसों से घरेलू सामान खरीद कर लड़की के साथ भेजना भी ''जेहाज'' कहलाता था, लेकिन कहाँ यह और कहाँ वह? (कि जिस का रिवाज आज कल हिन्दुस्तान जैसे मुल्कों के मुसलमानों में पड़ गया है) कहने का तात्पर्य यह है कि फिक्ह की किताबों में उल्लेखित इस किस्म के मसलों से मौजूदा दहेज का जो रूप है इसको दलील बनाना, किसी तरह सही नहीं।

तिलक की रस्म और उसका शरई हुक्मः–

फरमाइशी दहेज से भी बढ़कर बुरी बल्कि शर्मनाक वह रस्म है जो तिलक के नाम (या दूसरे नामों से) कुछ जगहों पर प्रचलित है, जिसमें वास्तव में पति खरीदा जाता है, यह रस्म तो ऐसी निर्लज्जतापूर्ण और अमानवीय है कि इसकी भर्त्सना के लिए शब्द मिलने मुश्किल हैं, मगर यह रस्म है कि ''महामारी'' की तरह फैलती और बढ़ती जा रही है, इसलिए उम्मत के उलमा और समाज सुधारकों की जिम्मेदारी बढ़ती जा रही है, उन्हें चाहिए कि इसके खात्मे और जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए अपनी तमाम कोशिशें सर्फ कर दें वरना आयत से जो धमकी सामने आती है उसकी कल्पना से ही हर अवगत व्यक्ति को काँप जाने के लिए काफी होना चाहिए।

इन रस्मों की तबाहकारियाँः–

इन बुरी रस्मों की तरफ से लापरवाही बरतना या इस बारे में अनदेखी करना अब किसी तरह

सुधारकों व उलमा के लिए गवारा बल्कि जायज नहीं मालूम होता, क्यों कि अब पानी सर से ऊँचा हो चुका है हर जगह हज़ारों जवान लड़कियां खासतौर पर पढ़ी लिखी लड़कियां बिन ब्याही बैठी हैं, जिन में से कुछ आत्महत्या तक कर लेती हैं और कुछ इस्लाम से फिर भी जाती हैं। अगर इस तरफ तत्काल ध्यान नहीं दिया गया तो इस तरह की घटनाएं और बढ़ जाएंगी, जिनकी जिम्मेदारी से मुसलमान खास तौर से प्रभावी और इल्म वाले नहीं बच सकेंगे, इस सिलसिले में ''मुस्लिम पर्स्नल लॉ बोर्ड'' मत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है इसलिए कि उसके उद्देश्यों में ''इस्लाहे मुआशरा'' (समाज सुधार) बुन्यादी हैसियत रखता है, इस से बढ़ कर सुधार की और कौन सी जरुरत होगी। इस के अलावा हर जगह की प्रभावशाली जनता भी विभिन्न तरीकों से इस रस्म को जड़ से उखाड़ फेंकने में प्रभावी किरदार अदा कर सकती है, जैसे ऐसी शादियों का पूर्ण बॉयकॉट करें जहाँ कहीं ज़ियादा दहेज देते या ''तिलक'' जैसी और कोई रस्म होते देखें, और फिर जिस जगह लड़के, या उसके अभिभावकों को लड़की वालों से मांग करते देखें या सुनें तो उनके खिलाफ ऐसा माहौल बनाएं कि उनका समाज में रहना दुश्वार और किसी लड़की का मिलना असंभव हो जाए, इसके अलावा सामाजिक अवसरों पर, चाहे वाज व नसीहत के जल्से हों या किसी और मकसद से लोग इकट्ठा हुए हों, इस मसले की शरई हैसियत सबके सामने लाई जाए, और इसके हराम होने और बुराई को जेहनों में बैठाई जाए, और बताया जाए कि इस तरह की मांग के बाद जो माल भी मिलेगा वह शरीयत की नजर में रिश्वत होगा जिसका लेना हराम है। अल्लामा शामी ने तो इस तरह के माल को ''सोहत'' कहा है, और ''रिबा व सोहत'' (हराम तरीके का शोषण) वह संगीन अपराध है, जिस की वजह से कुरआन में यहूदियों की घोर भर्तस्ना की गयी है, और इसे नबियों के कत्ल जैसे अपराधों के साथ जिक्र करके उन्हें लानत और सख्त अजाब का हकदार करार दिया गया है, हदीस शरीफ में अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया :–

''सोहत'' यानी हराम माल जिसने इस्तेमाल किया हो, उसके लिए जहन्नम की आग ज़ियादा मुनासिब है, (यानी ऐसा ही व्यक्ति जहन्नम को चाहिए)।

(मिश्कात जिल्द–1 पृष्ठ 242)

इसी तरह एक और हदीस में है :–

हराम खाने से पला हुआ जिस्म जन्नत में नहीं जा सकेगा।

(मिश्कात जिल्द 1, पृष्ठ 243)।

और जब तक भी इस्तेमाल करेगा गुनहगार रहेगा, तो क्या किसी मुसलमान की दीनी हिस्सा (संवेदना) इस हद तक मुर्दा हो सकती है कि वह पूरी उम्र गुनाह और ''हराम'' में लिप्त रहे।

यह भी बताना शायद बेजा ना हो कि हराम तरीके से हासिल की हुई चीजों के इस्तेमाल से नमाज और दुआ भी अल्लाह के यहाँ कबूल नहीं होती, हदीस शरीफ में है कि अल्लाह के रसूल (स०) ने फरमाया :–

अगर किसी ने कोई कपड़ा (मिसाल के तौर पर) दस दिरहम (यानी लगभग तीस ग्राम चांदी) में खरीदा और उसमें एक दिरहम भी हराम माल का है तो उसकी

उस वक्त तक नमाज कबूल नहीं होगी जब तक वह कपड़ा जिस्म पर है।

(मिश्कात जिल्द–1 पृष्ठ 143)

अगर किसी ने कोई कपड़ा (मिसाल के तौर पर) दस दिरहम (यानी लगभग तीस ग्राम चांदी) में खरीदा और उसमें एक दिरहम भी हराम माल का है तो उसकी उस वक्त तक नमाज कबूल नहीं होगी जब तक वह कपड़ा जिस्म पर है।

(मिश्कात जिल्द–1 पृष्ठ 143)

इसी तरह मुस्लिम शरीफ में है :

अल्लाह पाक है इस लिए पाक (कमाई की) चीज़ ही कबूल फरमाता है, फिर आप ने ऐसे व्यक्ति का (मिसाल के तौर पर) जिक्र किया जो लम्बे सफर में होने के कारण बुरी हालत में है और अल्लाह तआला से हाथ उठा कर दुआएं मांग रहा है मगर उसकी दुआ कबूल नहीं होती क्योंकि उसके खाने पीने का सामान और लिबास हराम (कमाई का) है।

(सहीह मुस्लिम जिल्द–1 पृष्ठ 326)

क्या कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आखिरत पर पूरा यकीन हो वह तमाम उम्र की नमाजें बर्बाद करने और अल्लाह तआला के यहां लगातार गुनाह में लिप्त रहने की हालत में पेश होना गवारा कर सकता है?अगर नहीं तो फिर ऐसे तिलक और फरमाइशी दहेज जैसे माल लेने से उसे इस तरह बचना चाहिए जिस तरह सांप बिच्छु और दूसरे जहरीले और दूसरे खतरनाक जानवरों से बचा जाता है, बल्कि उससे भी ज़ियादा ध्यान देना चाहिए क्यों कि जहरीले जानवरों के असर ज़ियादा से ज़ियादा इसी दुनिया तक सिमित रहते हैं, जब की ''हराम'' माल के खतरनाक असर इस दुन्निया में भी पड़ेंगे इसके बाद उस आलम तक बरकरार रहेंगे जिसे आखिरत कहते हैं। (अल्लाह तआला हमें अपने नफ़्स की बुराइयों से और आमाल की खराबियों से अपनी पनाह में रखे)।

यहां एक और हदीस बयां करना अनुचित ना होगा, जिसमें फरमाया गया है कि इस तरह गैर शरई तरीके से हासिल हुए माल में बरकत नहीं होती, यानी जल्द खत्म हो जाता है बल्कि अक्सर अपने साथ बहुत सी मुसीबतें और तकलीफें भी लाता है और ऐसा व्यक्ति अगर सदका करता है तो वह भी कबूल नहीं होता (और मुसीबतें नहीं तालतीं बल्कि बाकी रहती है) और इसका खतरा है कि ऐसे माल के इस्तेमाल करने से जो औलाद हो वह नाफरमान और नालायक हो, और अगर ऐसा माल मरने के बाकी रहता है तो वह अपने पीछे भयानक प्रभाव छोड़ता है, असल हदीस इस तरह है :–

''जो कोई बंदा भी हराम माल कमाता है और उस में से सदका करता है ताकि वह कबूल हो जाए और उसमें से खर्च करता है ताकि उसमें बरकत हो और अपने पीछे भी छोड़ता है तो ये माल उसको जहन्नम के और निचले हिस्से में ही ले जाता है'' (मिश्कात जिल्द 2, पृष्ठः 76)

अल्लाह तआला से दुआ करना चाहिए कि वह अपनी खुशी वाले रास्ते पर चलाए और हर उस बुराई से बचाए जिस का नतीजा दुनिया व आखिरत में खराब और खुदा की नाराजगी के निकले।

''रब्बना तकब्बल मिन्ना इन्न क अंतस्समिउल अलीम''

❖❖❖

ज़कात के मसाएल

—इदारा

ज़कात इस्लाम का तीसरा रुक्न (स्तम्भ) है, कुर्आन पाक में 82 जगहों पर ज़कात अदा करने का हुक्म दिया गया है, और ज़कात न अदा करने वालों और दौलत जमा करके रखने वालों पर सख़्त वईदें (चेतावनियाँ) आई हैं और अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया कि जो शख़्स नमाज़ काइम करे मगर ज़कात न दे वह पक्का मुसलमान नहीं है।

ज़कात का अर्थ है पाक होना चूंकि ज़कात निकालने से माल पाक हो जाता है और ज़कात निकालने वाले का दिल भी पाक हो जाता है इसलिए इस फ़रीज़े को ज़कात कहा जाता है। शरीअत की परिभाषा में साहिबे निसाब होने पर विशेष मात्रा में माल माजूरों (विवश) को देने का नाम ज़कात है।

ज़कात को कुर्आन के आदेश के अनुसार आठ प्रकार के लोगों पर खर्च किया जा सकता हैः—

1. फ़ुकरा :— जिनके पास कुछ न हो।

2. मसाकीनः— जिनके पास ज़रूरत भर भी न हो।

3. आमिलीनः— जो हुकूमत की तरफ़ से ज़कात वसूलते हैं।

4. मुवल्लिफतुलकुलूबः— इस्लाम लाने वाले लोग जिनकी दिल जमई की ज़रूरत हो।

5. गुलाम आज़ाद कराने में।

6. गारिमीनः— जो किसी का क़र्ज़ अपने जिम्मे लेले। या खुद किसी आफ़त का शिकार हो जाये।

7. फ़ीसबीलिल्लाहः— जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद वगैरह में मशगूल हो।

8. इब्नुस्सबीलः— मुसाफिर जो हालते सफ़र में परेशान हो चाहे घर का मालदार हो। (सूरः तौबा)

जिनको ज़कात देना जाएज़ नहीं:-

1. सय्यिद और बनू हाशिम।

2. मालदार जो साहिबे निसाब हो।

3. अपनी औलाद यानी बेटा, पोता, पोती और नवासी वगैरह को।

4. अपने उसूल (मूल) यानी बाप, दादा और नानी वगैरह को।

5. शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को।

6. काफ़िर और मुशरिक को।

7. मालदार की नाबालिग़ औलाद को।

ज़कात का निसाब और उश्रः-

सोनाः-20 दीनार यानी साढ़े सात तोला (87.479 ग्राम) में ज़कात वाजिब हो जाती है।

चाँदीः- 200 दिरहम यानी साढ़े 52 तोला (612.35 ग्राम) में ज़कात वाजिब हो जाती है।

नोटः- अगर किसी के पास साढ़े बावन तोला चाँदी या साढ़े सात तोला सोना या उनमें से किसी के बक़द्र रूपया हो और उस पर साल गुज़र जाये तो उस पर उसका चालीसवां हिस्सा बतौर ज़कात फ़र्ज है।

उश्रः- उश्र भी ज़कात की तरह फ़र्ज़ है और उन तमाम चीज़ों पर उश्र है जो ज़मीन से पैदा हुई हों, चाहे ग़ल्ला हो, फल हो, सब्ज़ी हो, सूरः ''अनआम'' में अल्लाह तआला ने फ़रमाया फ़सल काटने के वक़्त अल्लाह का हक़ निकाल दिया करो।

नबी करीम सल्ल0 का इरशाद है ''बारिश और चशमें के पानी से यानी कुदरती साधनों से सींची हुई खेती में उश्र दसवां हिस्सा, ग़ैर कुदरती साधनों नहर और ट्यूब्वेल वगैरह से जिस खेती की सिंचाई की जाये उस पर बीसवां हिस्सा उश्र वाजिब है। पैदावार की कोई मात्रा नियुक्त नहीं, चाहे थोड़ी हो या बहुत, उश्र वाजिब है, इस पर साल गुज़रने की शर्त नहीं फसल तैयार होने पर उश्र का अदा करना ज़रूरी है।

सद्क़-ए-फ़ित्रः-

शरई हुक्म यह है कि रमज़ान का महीना पूरा होने के बाद हर मालदार साहिबे निसाब ईद की नमाज़ से पहले अपनी और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से सद्क–ए–फित्र अदा करे, इसकी तफ़सील यह है कि जिसके पास बुन्यादी ज़रूरियात, रहाइशी मकानात, खाने पीने का सामान, इस्तेमाली कपड़े के अलावा, किराये के मकानात, ज़मीन रखे हुए कपड़े फ़ाजिल ग़ल्ला, सोना चाँदी या कैश रक़म इतनी मिक़दार में हो कि उनकी क़ीमत साढ़े बावन तोला चाँदी को पहुंच जाये उस पर सद्क़ा फ़ित्र वाजिब है।

सदक़–ए–फित्र अगर गेहूँ की शक्ल में दिया जाये तो आधा साअ़ दिया जायेगा, गेहूँ के अलावा दूसरी चीज़ें एक साअ़ दी जायेंगी, हिन्दोस्तानी वज़न के लिहाज़ से आधा साअ़ 1.666 किलो ग्राम और एक साअ़ 3.332 किलो ग्राम है, गोया कि हर आदमी के सद्क–ए–फित्र की मात्रा गेहूँ के लिए 1.666 किलो ग्राम और दूसरी चीज़ों के लिए 3.332 किलो ग्राम है। ईद के दिन सूरज निकलने के बाद सदक़–ए–फित्र वाजिब होता है अलबत्ता नमाज़े ईद से पहले पहले अदा करना अफ़ज़ल है।

मसअलाः- सदक़–ए–फित्र पेशगी भी अदा करना जाएज़ है। सदक़–ए–फित्र के खर्च करने की वही जगह है जो ज़कात की हैं।

नमाज़े ईदः-

नीयत करे कि दो रकअ़त नमाज़ वाजिब ईदुल फ़ित्र 6 वाजिब तकवीरों के साथ पढ़ता हूँ, इसके बाद इमाम की इक़तिदा में तकबीर तहरीमा कह कर हाथ बांध ले और सना पढ़े, फिर दोनों हाथ कानों तक उठा कर ''अल्लाहु अक्बर'' कहे और हाथ छोड़ दे, फिर आथ उठा कर ''अल्लाहु अक्बर'' कहे और हाथ छोड़ दे फिर ''अल्लाहु अक्बर'' कहे और हाथ छोड़ दे, फिर 'अल्लाहु अक्बर'' कहे और हाथ बाँध ले और क़िरत सुने, एक रकअत पूरी करके दूसरी रक्अ़त की अलहमदो और सूरत पढ़ी जाने के बाद उसी तरह तीन मरतबा 'अल्लाहु अक्बर'' कहे और हर मरतबा हाथ उठा कर छोड़ दे, फिर चौथी मरतबा बग़ैर हाथ उठाए 'अल्लाहु अक्बर'' कह कर सीधे रुकु में जाये और इमाम के साथ नमाज़ पूरी करे, इसके बाद ख़ुतबा सुने, ख़ुतबे का सुनना वाजिब है।

❖❖❖

तौहीद का अक़ीदा

—मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह0

इस्लामी ज़िन्दगी में तौहीद का शब्द बहुत महत्वपूर्ण है, इसके बिना अल्लाह के नज़दीक छोटा बड़ा कोई अमल स्वीकार नहीं किया जाता, ''तौहीद'' का अर्थ अल्लाह को हर प्रकार से एक जानना और एक मानना है, इसमें कण बराबर भी अन्तर नहीं होना चाहिए, इस्लाम चौबीस घण्टे की ज़िन्दगी में पाँच नमाज़ों में इन्सान से इक़रार करवाता है ''ऐ अल्लाह! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं, इन्सान सोचे और ग़ौर करे कि हमारी ज़िन्दगी इस इक़रार के अनुकूल है या नहीं कुरआन 'तौहीद'' की शिक्षा और आदेश से भरा हुआ है, कुर्आन की एक सौ चौदह सूरतों का सारांश यही है कि अल्लाह को एक जानों और एक मानो उसके साथ किसी अन्य को साझीदार मत बनाओ, कुर्आन इस बुन्यादी अक़ीदे को समझाने और बताने के लिए खुली हुई निशानियां और दलीलें देता है ताकि इन्सान सीधे मार्ग से हटे नहीं और अपने वास्तविक स्वामी से जुड़ा रहे, सूरः रूम की आयत न0 40 में फरमाता है ''वह अल्लाह जिसने तुम को पैदा किया, फिर तुम को रिज़्क़ (जीविका) दिया फिर तुमको मौत देगा, फिर तुम को ज़िन्दा फ़रमाएगा, क्या उनमें से कोई, जिनको तुम उसका साझीदार ठहराते हो, कोई एक काम भी कर सकता है, पाक है वह और बलन्द बाला है, उससे जिसको वह शरीक ठहराते हैं''।

सूरः रूम की इस आयत में अल्लाह तआला ने ईमानियात के सिलसिले में एक अहम पहलू की तरफ़ इशारा फ़रमाया है और इन्सान के शान्ति प्रिय दिल को संवोधित किया है, उसमें चार बुन्यादी बातें बयान की गई हैं:—

एक पैदाइश अर्थात इन्सान का अदम (अस्तित्व) से वजूद में आना, दूसरे उसके रिज़्क़ जीविका का सामान तीसरे मौत, और चौथे ज़िन्दा किया जाना उसके बाद कहा गया अल्लाह तआला वह है जिसके पूर्ण अधिकार में पूर्ण रूप से यह चारों चीज़ें हैं, अब तुम बताओ कि इन असत्य मअ़बूदों के हाथ में जिन को तुमने अल्लाह तआला का शरीक साझीदार बना रखा है क्या उनमें से किसी एक चीज़ पर भी वह अधिकार रखते हैं। सूरः रूम की इस आयत से कुछ ही पहले इन्सानी फ़ितरत का ज़िक्र किया है। अल्लाह तआला की बनाई हुई फ़ितरत जिस पर अल्लाह तआला ने लोगों को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती।

(सूरः मरयम—30)

इसमें इस बात की ओर इशारा है कि इन्सान की फ़ितरत (प्रकृति) सत्य और शान्ति प्रिय है उसके अन्दर सच्चाई को मानने की सलाहियत है, अल्लाह तआला के लिए उसके स्वाभाव में नम्रता और विनय सम्मलित है। इस प्रस्तावना के बाद मानव इतिहास का सबसे बड़ा चैलंज पेश किया गया है, कि वह क़ादिरे मुतलक़ सर्व शक्तिमान ख़ालिक़ व राज़िक, जनक और अन्यदाता, मारने वाला वे जिलाने वाला अल्लाह बन्दगी और अज्ञापालन के योग्य है या वह जिनको तुमने अल्लाह का साझीदार बनाया? यदि इन्सान की प्रकृति बिगड़ी हुई नहीं है और गुनाहों पर इस्रार, द्वेष ने उसके दिल पर मुहर नहीं लगा दी है तो बिना झिझक तुरन्त अल्लाह के सामने सर झुका देना यह उसकी आत्मा की पुकार होगी, इससे उसकी बन्दगी की भावना को सन्तुष्टी होगी, यह वह मौक़ा है जहां किसी प्रमाण और तर्क की आवश्यकता नहीं।

इन्सान का पैदा करने वाला अपनी सृष्टि, अपने लाचार बेबस बन्दे से जो किसी समय भूल चूक की वजह से रास्ते से भटक गया है और शिर्क के अंधेरे में फंस गया है यह मुतालबा करता है कि वह इस बात को स्वयं सोचे और देखे कि वह अपने साथ कितना बड़ा ज़ुल्म कर रहा है।

फ़ितरत (प्रकृति) की यह सलामती वास्तव में वह प्रतिज्ञा है जो इन्सान की पैदाइश के समय तमाम नबियों की मौजूदगी में किया गया था, और अल्लाह तआला ने फ़रमाया था ''अलस्तुबिरब्बिकुम'' क्या तैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? ''कालू बला'' सबने कहा हाँ! (सूरः आराफ़–172) यह फ़ितरत दुन्या के हर इन्सान में है, इसी की तशरीह ब्याख्या हदीस शरीफ़ में ''हर पैदा होने वाला फ़ितरत पर पैदा होता है'' फिर बाद में उसके माँ–बाप उसको यहूदी बना देते हैं, नसरानी बना देते हैं, या मजूसी बना देते हैं, यह सब माँ–बाप की तालीम व तरबियत और माहौल के प्रभाव और अनुकरण के नतीजे में होता है।

ऊपर लिखित आयतों में जिन बातों की ओर इशारा किया गया है, वह ऐसी खुली हुई हैं कि जाहिल आदमी और कम से कम अक़्ल रखने वाला भी उनको महसूस करता और समझता है। ◆◇◆

धर्म और ज्ञान.....

के पतन के साथ सन् 1490 ई0 में इन अदालतों की व्यवस्था प्रशासन ने अपने हाथ में ले ली थी। सत्तरहवीं शताब्दी से इनका पतन शुरु हुआ। सन् 1808 ई0 में नैपोलियन ने उन्हें जीतने का प्रयास किया। किन्तु 1820 ई0 में यह फिर क़ायम हो गईं और 1835 ई0 तक किसी न किसी रूप में चलती रहीं। यह कहना कठिन है कि कितने लोग इन अदालतों की भेंट चढ़े किन्तु ऐसे लोगों की संख्या लाखों तक पहुँचती है।

जारी.....

❖❖❖

अल्लाहु अक्बर के माना हर फर्द को बताओ

ख़ालिक़ की हम्द गाएं कि ईद की ख़ुशी है
मालिक की हम्द गाएं कि ईद की ख़ुशी है
नअ़ते नबी पढ़ें हम कि ईद की ख़ुशी है
दुरूदो सलाम भेजें कि ईद की ख़ुशी है
माबूद फक़त रब है ख़िल्क़त का वही ख़ालिक़
अर्ज़ो समां का ख़ालिक़ शम्सो क़मर का ख़ालिक़
उसके नबी मुहम्मद ताअ़त है उनकी लाज़िम
वह हैं हमारे आक़ा हम सब हैं उनके ख़ादिम
रब की करें इबादत पकड़ें न शिर्को बिदअ़त
सुन्नत से हो महब्बत बिदअ़त से रहे नफ़रत
लाखों सलाम रहमत प्यारे नबी पे या रब
आल पर भी उनकी अस्हाब पर भी या रब
ईद की ख़ुशी है लो खाओ यह सिवय्यां
मेवों से वह सजी हैं क्या ख़ूब हैं सिवय्यां
कैसे मटर घुले हैं उस पर दही बड़े हैं
क्या फुल्कियां घुली हैं खाओ मज़े बड़े हैं
रब की यह नेमतें हैं ख़ुश हो के इन को खाओ
रब ने ख़ुशी यह दी है दिल से ख़ुशी मनाओ
सबसे बड़ा ख़ुदा है हर शख़्स को सुनाओ
अल्लाहु अक्बर के माने हर फर्द को बताओ

बिखरते टूटते रिश्ते"

—अबू ओमामा

ज़िन्दगी में खुद को कभी किसी का आदी नहीं बनाना चाहिए क्योंकि इन्सान बहुत खुदगर्ज़ होता है। जब वो किसी को पसन्द करता है तो उसकी बुराइयों को भूल जाता है और जब उसे ना पसन्द करता है तो उसकी अच्छाइयों को भूल जाता है। गुज़रे हुए वक़्त के बारे में सोचिए और ज़ेहन को दूर तक दौड़ाइए तो ये मालूम होगा कि ज़रा ज़रा सी बात पर वो लोग ही बिछड़ गए जो ज़िन्दगी हुआ करते थे।

मेरे अज़ीज़ ही मुझको समझ न पाये कभी
मैं अपना हाल किसी अजनबी से क्या कहता

आसानियाँ, आज़माइशें और परेशानियां हर किसी की ज़िन्दगी में आती हैं। परेशानियों में एक दूसरे की मदद करना इंसानी फ़रीज़ा है लेकिन इसके बावजूद, मुसीबत और परेशानी में अगर मदद मांगने की ज़रूरत पेश आ जाये तो सोच समझ कर ही मदद मांगना चाहिए क्योंकि मुसीबत थोड़ी देर की होती है और एहसान ज़िन्दगी भर का। ये बात, वो एहसास है जो रिश्तों की कड़वाहट और उसके दर्द को बयां करती है। ज़िन्दगी, इस तरह के जज़्बात, एहसासात और ख़्यालात से महफ़ूज़ रही है यक़ीनन वो बड़े दिल, बड़े होसले और आला इन्सानी सिफ़ात के मालिक, और खुश नसीब लोग होंगे, लेकिन ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। उमूमन मदद हासिल करने वाले शख़्स का दर्जा मदद फ़राहम करने वाले शख़्स की नज़र में कम हो जाता है। कई मुआमलात में मदद हासिल करने वाले शख़्स को मदद करने वाले शख़्स के तर्जे अमल और अंदाज़े गुफ़्तुगू से खुद पर एहसान किये जाने की बू आती है। हस्सास तबियत वाले इन्सान को, ये बात ज़िन्दगी भर एक कर्ब में मुब्तला रखती है। ऐसी सूरत में रिश्तों को नार्मल रख पाना बड़ी दिक्कत तलब बात होती है। समझदारी और फराख़दिली से अगर काम न लिया जाये तो रिश्तों की मिठास कड़वाहट में तब्दील हो जाती है।

रिश्तों की शुरुआत घर से होती है वालिदैन और भाई बहनों का आपस में एक ख़ूनी रिश्ता होता है जो उमूमन सगे रिश्तेदार कहलाते हैं। रिश्तों के इस दायरे को ज़रा वसी कीजिए तो दादा, दादी, नाना, नानी, चाचा चाची, खाला, खालू, फूफी, फूफा, मामू वग़ैरा बहुत करीब नज़र आते हैं। इसके अलावा और भी रिश्ते हैं जो रिश्तेदारी बनने से वजूद में आते हैं। जैसे शौहर बीवी, सास ससुर देवर नन्द, भाभी वग़ैरा वग़ैरा। हम एक मुआशरे में रहते हैं। इसके सबब हमारे

कुछ मुलाक़ाती होते हैं, कुछ कलीग होते हैं, और कुछ दोस्त अहबाब भी होते हैं। ये रिश्ते और तअ़ल्लुकात इन्सानी ज़िन्दगी के लिए बहुत अहम हैं। इसी दायरे में रह कर इन्सान ज़िन्दगी गुज़ारता है। इन रिश्तों को मज़बूत बनाए रखने के लिए इसको सींचना पड़ता है। इन सब के बावजूद आपसी रिश्ते या तअ़ल्लुकात हमेशा हर किसी से ठीक रहेंगे, इसकी कोई ज़मानत नहीं दे सकता। मुआमलात बनते या बिगड़ते हैं तो रिश्ते भी अपने ग़ैर के बंधन को तोड़ कर हुदूद से बाहर निकल जाते हैं जिसके सबब अपनों में ही कभी–कभी बदतरीन दुश्मन और ग़ैरों में बेहतरीन दोस्त (ख़ैरख़्वाह) मिल जाते हैं। रिश्तों और तअ़ल्लुक़ात को आपस में मजबूती से जोड़े रखने से एक अच्छे और सेहतमन्द मुआशरे की तश्कील होती है। रिश्ते बहुत नाज़ुक होते हैं। ईमानदारी से रिश्तों को निभा पाना तलवार की धार पर चलने के मिस्दाक़ है। नासमझी और ख़ुदग़र्ज़ी के सबब अक्सर लोग आपस में तल्ख़ी पैदा कर बैठते हैं और एक दूसरे से दूरी बना लेते हैं।

अब तो रिश्ता ही मर जाता है बुरे वक़्तों पर
पहले मर जाते थे रिश्तों को निभाने वाले

रिश्तों को बनाये रखने और निभाए जाने पर बहुत ज़ोर दिया गया है। *"रिश्ता तोड़ने वाला जन्नत में दाखिल नहीं होगा"*

(सही मुस्लिम 2556)

इस हदीस से रिश्तों की अहमियत का अंदाज़ा बखूबी लगाया जा सकता है। रिश्तों को बनाये रखने में हर फ़र्द को बड़ी समझदारी से काम लेने की ज़रूरत होती है। समझदार इन्सान वो नहीं है जो बड़ी बड़ी बातें करता है। इन्सान समझदार तब कहलाता है जब वो छोटी–छोटी बातें समझने लगता है। और उसका लिहाज़ रखता है। ये बातें अच्छे तअ़ल्लुक़ात और मज़बूत रिश्तों की बुन्याद हैं। ज़िन्दगी जीना आसान नहीं है। ये एक हुनर है। हुनरमंदी से ज़िन्दगी को आसान बनाना पड़ता है, कुछ सब्र करके, कुछ बर्दाश्त करके और कुछ नज़र अंदाज़ करके।

मैं चुप रहा ये सोच के अपनों के दरमियान
सब बोलने लगेंगे तो घर टूट जायेगा

रिश्तों और तअ़ल्लुकात के बिना पर आपस में जुड़े लोगों का साथ दरिया में एक साथ बहते हुए तिनकों के मानिन्द है, जो साथ मिल कर दूर तक बहते चले जाते हैं। फिर पानी की लहरों का एक तेज़ थपेड़ा उनसे आकर टकराता है और उन्हें अलग कर देता है। उनमें से कोई किनारे आ लगता है, कोई बहता हुआ कुछ टूट कर, डूब कर फ़ना हो जाते हैं। इन्सानी रिश्तों और आपसी साथ की बस यही सच्चाई है। इस हक़ीक़त को हम समझेंगे तो हमारे ख़यालात भी बदलेंगे। एक न एक दिन सभी को एक दूसरे से जुदा होना ही है। जब तक साथ है एक दूसरे से प्यार महब्बत और अपनेपन से जिये जाने में ही समझदारी है।

बहुत से लोग रिश्ते और तअल्लुक़ात को अहमियत नहीं देते हैं। ऐसे लोग किसी न किसी ज़ोम में मुब्तला रहते हैं। किसी को अपने इल्म का ज़ोम होता है तो कोई अपने हुस्न और दौलत के नशे में चूर रहता है। कुछ अपने को आला ज़ात और नसब की ग़लत फ़हमी में मुब्तला रखते हैं, हर वक़्त इसी का गीत गाते रहतें हैं और किसी को ख़ातिर में नहीं लाते। इस तरह की बातें भी रिश्तों में दूरियां पैदा करती हैं।

इन्सानी फ़ितरत है कि जब लोग एक दूसरे से मिलते हैं, या साथ रहते हैं तो वह एक दूसरे से मुतअस्सिर होते हैं या एक दूसरे को मुतअस्सिर करते हैं। ये एक नार्मल और पॉज़िटिव बात है। लेकिन अगर कोई पहले से ही ये ठान ले या माहौल बना कर रखे कि हम को तो सिर्फ मुतअस्सिर करना है, मुतअस्सिर होना नहीं है, यानी किसी की सुन्ना नहीं है, जैसा कि आज कल टीवी चैनलों पर होने वाली बहसों के दौरान इस तरह के नज़ारे खूब देखने को मिलते हैं। ऐसा अपनों के दरमियान घरों में बाहर दफ़्तरों में, पड़ोस में और कहीं भी हो सकता है। ऐसा रवैय्या आपस में बेवजह तल्खी पैदा कर सकता है। इस तरह के ज़िद्दीपन और अड़ियल रवैय्या की वजह से बेमक़सद बहस तूल पाती है। बहस के दौरान जज़्बात में बह जाने, गुफ़्तगू का अंदाज़ और लहजा, बॉडी लैंग्वेज, बेतुके और ग़ैर मुनासिब अलफ़ाज़ के इस्तेमाल से रिश्ते और तअ़ल्लुक़ात पर बुरा असर पड़ता है। लॉजिकल बात कोई भी कहे उसे, तवज्जो दी जानी चाहिए।

ख़्याले खातिर अहबाब चाहिए हरदम
'अनीस' ठेस न लग जाये अबगीनों को

इन्सान को हक़ीक़त पसंद होना चाहिए। हक़ीक़त पसंदाना रवैय्ये अपनाने, दूसरों के जज़्बात, माकूल ख्यालात और मर्तबे को अहमियत देने से बातें बनती हैं, बिगड़ती नहीं। कहते हैं कि अलफ़ाज़ दिल जीत भी लेते हैं और दिल चीर भी देते हैं। दिल अगर फ़ट गया तो लोग एक दूसरे से मिलना कम कर देते हैं बात करना कम या फिर बंद कर देते हैं। मामूली मामूली बातों से ये सूरत पैदा हो सकती है और अगर ज़ियादा अरसे तक सर्द मोहरी का ये सिलसिला जारी रहा तो लोग एक दूसरे के लिए ग़ैर और बिलकुल अजनबी बन जाते हैं।

इस तरह की नादानी से लोग अपने मुख़्लिस और खैरख़्वाहों को भी खो सकते हैं पुरसुकून, अच्छी और कामयाब ज़िन्दगी के लिए मुख्लिसों और खैरख्वाहों की बड़ी अहमियत है। उन्हें इज़्ज़त और एहतराम के साथ अपने से जोड़े रहना बेहद ज़रूरी है। मुख्लिस और खैरख़्वाह इन्सान रात में सड़क पर जलती हुई स्ट्रीट लाइट के मानिन्द होते हैं। जो हमारे सफ़र की दूरी तो कम नहीं कर सकते लेकिन हमारी राह को रोशन करके सफ़र को आसान ज़रूर

कर सकते हैं। रिश्तों और तअल्लुक़ात को ले कर हमें बहुत हस्सास होना चाहिए। इनमें एक तवाज़ुन बना कर ज़िन्दगी जीना चाहिए।

अफ़सोस कि हमारे अन्दर इन्सानी क़द्रें कमज़ोर पड़ गयी हैं, हमने सब्र का दामन छोड़ दिया है। हमारे अन्दर से ख़ुलूस महब्बत, बड़ों की इज़्ज़तो एहतेराम, खिदमत और ईसार का ज़ज़्बा नापैद हो रहा है। लोगों का एक दूसरे पर एतबार कमज़ोर पड़ चुका है। लालच ने दिलों में घर कर लिया है। लोगों का एक दूसरे पर एतबार कमज़ोर पड़ चुका है। मौक़ा परस्ती आम हो गयी है। आज के दौर में बिखरते टूटते रिश्तों की मुख़्तसर सी यही दास्तान है।

गुस्सा और अदमबर्दाश्त खुशगवार तअ़ल्लुक़ात को शदीद नुक़सान पहुंचाते हैं। कोई कभी भी गुस्सा कर सकता है। ये बहुत आसान काम है। लेकिन गुस्सा किये जाने के लिए मुस्तहिक़ शख़्स पर गुस्सा, मुनासिब दर्जे का गुस्सा, सही मौक़े पर गुस्सा, जाएज़ मक़सद के लिए गुस्सा और फिर उस गुस्से को मुनासिब अंदाज़ में ज़ाहिर करना हर किसी के बस की बात नहीं। लिहाज़ा जब किसी का कोई अमल आपके लिए बाइसे नाराज़गी हो तो खुद का मुहासबा करें। बहुत मुमकिन है कि आप अपना गुस्सा और नाराज़गी भूल जाएँ।

रिश्तों और तअ़ल्लुक़ात को बेहतर बनाने के लिए इसे बराबर सींचना पड़ता है। दूसरों के जज़्बात का ख़्याल, ज़बान पर कन्ट्रोल, सबसे प्यार महब्बत, हक़ीक़त पसंदाना रवैय्या, जज़्बए ईसार और पॉजिटिव थिंकिंग, रिश्तों और तअ़ल्लुक़ात को मज़बूत और पायेदार बनाने में बहुत अहम किरदार अदा करते हैं। फी ज़माना इन बातों पर ज़ियादा तवज्जो दिए जाने की ज़रूरत है। किसी ने क्या खूब कहा है:

मसले खुद बखुद हल हो जाएंगे
अपनी अपनी हदों में रहा कीजिए

❖❖❖

मुसलमान की इज़्ज़त.....

तो सिर्फ यह कि समस्याएं हल हो सकती हैं, बल्कि टूटे दिल दोबारा जुड़ सकते हैं, और प्यार व महब्बत बहाल हो सकती है, और हमारा समाज आपसी हमदर्दी सहकारिता और स्थिरता के साथ चल सकता है और एक दूसरे के अमल और राय में जो कमज़ोरी हो सकती है वह भी अच्छे ढंग से दूर हो सकती है, या कम से कम उसका नुक़सान कम से कम हो सकता है, इसी तरह अपने अमल और राय का नेक दिली के साथ समीक्षा करते रहना कि इसमें क्या खुदा की मर्ज़ी के खिलाफ़ हो सकता है और क्या दूसरों के लिए नुक़सान पहुंचाने वाली हो सकती है और जो ग़लत महसूस हो उससे बचने की कोशिश करना हमारे समाज की खूबी और बेहतरी का बड़ा ज़रिया साबित हो सकता है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25.04.2020 تاریخ

अहले खैर हज़रात से!

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम की सरपरस्ती में दारुल उलूम नदवतुल उलमा अपनी इल्मी व दीनी तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों एवं नियमों को सीने से लगाये हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था, यानी नये ज़माने में इस्लाम की मुअस्सिर और सही तर्जुमानी, दीन व दुन्या की व्यापकता और इल्म व रुहानियत के एकता की कोशिश, फितन–ए–लादीनियत और ज़ेहनी इरतिदाद का मुकाबला, इस्लाम पर एतिमाद और उलूमेइस्लामिया की बरतरी व इम्तियाज़ का ऐलान व इज़हार, दीने हक से वफादारी और शरीअत पर इस्तिक़ामत।

आपसे हमारी अपील है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत को समझते हुए पूरी फराख़दिली, फ़य्याज़ी और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर तआउन व मदद फरमायें कि हिन्दुस्तान में दीन के किलों की हिफ़ाज़त का इससे बेहतर रास्ता और इससे ज़ियादा पायदार कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

जैसा कि आप को मालूम है कि रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर दारुल उलूम नदवतुल उलमा के असातिज़ा, सुफ़रा व मुहस्सिलीन आप हज़ारात की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सद्क़ात व जक़ात व चन्दे की वसूलयाबी का काम अंजाम देत हैं लेकिन इस वक़्त पूरे मुल्क में क्रोना वायरस की वजह से लॉकडाउन है, ऐसे हालात में सफ़र करना ना मुम्किन है इसलिए आप के चन्दे की वसूलयाबी बैंक द्वारा ही मुम्किन है।

इसलिए आप हज़रात से अपील है कि अपने सद्क़ात व अतियात चेक/ड्राफ्ट और ऑन लाइन, नदवतुल उलमा के खातों में भेजें ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में नदवतुल उलमा के साथ आप का तआउन निहायत अहमियत रखता है, अल्लाह तआला हम सब की कोशिशों को कबूल फ़रमाये और उनको हमारे लिए ज़ख़ीर–ए–आख़िरत बनाये। आमीन

(मौलाना) मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी
नायब नाज़िम नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

(प्रोफेसर) अतहर हुसैन
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतियात)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

उर्दू सीखये –इदारा

नीचे लिखी उर्दू के अशआर पढ़िये,
मुश्किल आने पर बाद में लिखे हिन्दी अशआर से मदद लीजिए

روزہ رکھا ملا ثواب
پڑھی نمازیں ملا ثواب
نیکی کی توفیق ملی
بہت بڑھا کر ملا ثواب
خوشی مناؤ عید کی
پڑھو دوگانہ ملے ثواب
کھاؤ حلال اور طیّب تم
کھلاؤ غربا ملے ثواب
شکر کرو اللہ کا
بخشے جس نے ہمیں یہ ثواب

रोज़ा रखा मिला सवाब
पढ़ी नमाजें मिला सवाब
नेकी की तौफ़ीक़ मिली
बहुत बढ़ा कर मिला सवाब
ख़ुशी मनाओ ईद की
पढ़ो दोगाना मिले सवाब
खाओ ह़लाल और तय्यिब तुम
खिलाओ ग़ुराबा मिले सवाब
शुक्र करो अल्लाह का
बख़्शे जिसने हमें यह सवाब